चैतन्य लहरी

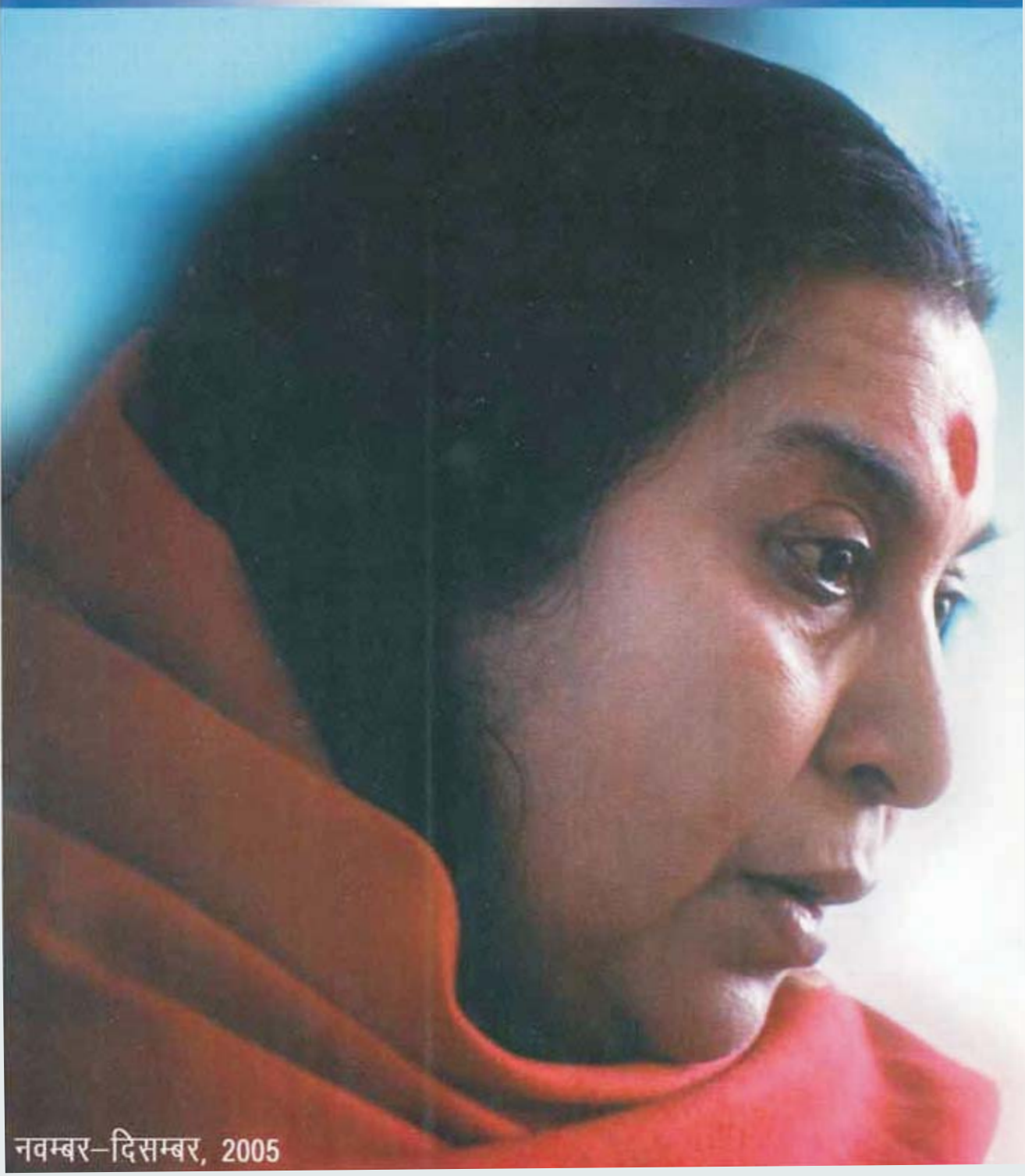

नवम्बर–दिसम्बर, 2005

इस अंक में:—

4 परम पूज्य श्रीमाताजी का प्रवचन— 30.1.1978

24 अहं एवं प्रति अहं

25 श्रीमाताजी की सहजयोगियों को सीख

28 श्रद्धा

30 ज्यूरिक से एक पत्र

32 परम पूज्य श्रीमाताजी का एक पत्र—लन्दन 2.6.80

33 श्रीमन सी0 पी0 श्रीवास्तव का स्वागत दिल्ली—4.1.80

41 सहजयोग का अलिखित इतिहास

प्रकाशक
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.
प्लाट न. 8, चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
पॉड रोड, कोठरुड
पुणे – 411 029

मुद्रक
अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
W.H.S 2/47 कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110015
मोबाइल : 9810452981, 25268673

आप अपने सुझाव, सदस्यता एवं जानकारी के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:–
श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस्टम्ज़ एवं टैक्नोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली–110 019
फोन : 26216654,

अपने अनुभव,सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी–11–(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110 034
दूरभाष : 011–55356811 (प्रातः एवं साय)

परम पूज्य श्री माताजी का प्रवचन
(30.1.1978)
रजोगुण, स्वाधिष्ठान, लक्ष्मीपति

.....काम करने पे लग गए तो काम ही कर रहें हैं। यही कहो सत्वगुण पर थे असल में, बहुत पहले फिर तमोगुण पर गए। रजोगुण की ओर गए। क्योंकि हम लोग अब developing बन गए हैं तो अब रजोगुण पर आ गए हैं। जब हम रजोगुण पर आ गए हैं तो मकान बनाने हैं, बड़े–बड़े महल खड़े करने हैं, कारखाने खोलने हैं। देश में बहुत सारा प्लास्टिक लाना चाहिए। अभी थालियों में खाना खा रहे हैं, फिर प्लास्टिक में खाएँगे। बाद में Paper में खाएँगे। Development हम लोग जो कर रहे हैं अपना। जिस वक्त आदमी अतिकर्मी हो जाता है,बहुत ज़्यादा कर्म करने लगता है तो उसके अंदर स्वयं ही संतुलन बिगड़ जाता है। Balance बिगड़ जाता है। उसकी एक विचित्र सी व्यवस्था अपने कुण्डलिनी योग में बनाई गई है। जो स्वाधिष्ठान चक्र कुण्डलिनी मार्ग में हैं, जिस चक्र से कुण्डलिनी गुज़रती है, जिस चक्र के कारण सारी सृष्टि की निर्मिति हुई, आकाश के ग्रह गोल, सारे तारे जिस चक्र के मारे इस संसार में आए, उस चक्र का स्थान हमारे भी अन्दर पेट में है। ये चक्र नाभी चक्र से निकल कर उसके चारों तरफ हरेक angle में चलता है। आगे पीछे भी हो सकता है। जैसे कमल की date होती है उस तरह वो लचीला होता है। उसके ऊपर, चक्र के ऊपर श्री ब्रह्मदेव का स्थान है और उनकी पत्नी, पत्नी तो नहीं कहना चाहिए, क्योंकि वो कुमारिका ही रहती है सदा, उनकी सहचरी जो है वो सरस्वती है या कहना चाहिए कि उनकी शक्ति जो है वो सरस्वती है। इस चक्र को मनुष्य के अंदर भी हम लोग बाहर से देख सकते हैं। इसे आँख से हम नहीं देख सकते, लेकिन इसका जो जड़ रूप है इसका जो Gross रूप है, उसे डाक्टर लोग Aortic plexus कहते हैं। इस चक्र में 6 पंखुड़ियाँ हैं। उसी प्रकार Aortic plexus में भी 6 Sub plexus हैं। लेकिन डाक्टर लोग इस बात को नहीं मानेंगे जब मैं कहूँगी कि इस चक्र का मुख्य कार्य यह होता है कि पेट में जो मेद है, जो fat है, उसको मेंदू माने अपने मग जिसे कहते हैं, या आप Brain जिसे कहते हैं, उस brain के cells का replacement करना। यहाँ का जो मेद है, जो fat है उसको evolve करके उसकी उत्क्रांति करके उसको इस योग्य कराना कि वो अपने brain का cell बन जाए। जब हम बहुत विचार करते हैं, जब हम बहुत planning करते हैं, जब हम बहुत सोचते हैं, जब हम रजोगुण को इस्तेमाल करते हैं

तब ये कार्य बहुत वेग से होता है। इसमें गति आ जाती है। हर समय हम लोग सोचते ही रहते हैं। फिर हमारा सोचना भी नहीं बंद होता। पूरे समय हम विचारों के चक्कर में उलझ जाते हैं। एक मिनट भी हम अपने विचार को रोक नहीं पाते। हज़ारों तरह के विचार हम एक के ऊपर एक अपने ऊपर लादते जाते हैं और planning में लगे रहते हैं। ये कार्य अविरत होते रहता है लेकिन जब इसकी गति बहुत ज़्यादा, जरूरत से ज़्यादा बढ़ जाती है तब इस चक्र के जो दूसरे कार्य हैं, जिसे कि हम कह सकते हैं कि हमारा liver, हमारा spleen, हमारा pancreas हमारी kidney, हमारा uterus इन सब चीज़ों को ये चक्र देखता है तो उसमें कमी आ जाती है और कभी कभी रुकावट सी आ जाती है क्योंकि एक ही कार्य में फिर संलग्न हो जाता इसलिए जो लोग दिमागी कार्य ज़्यादा करते हैं उन्हीं को Diabetes की बीमारी होती है। उन्हीं को heart-attack आता है। क्योंकि right side बहुत चलाने से left side जो है वो उसको balance देने की कोशिश करता है। बहुत आदमी जब काम करता हैं तो आश्चर्य की बात है कि गर आप शारीरिक श्रम कर रहें हैं, Physical labour कर रहें हैं तो आपका heart नहीं पकड़ना चाहिए क्योंकि heart तो emotional चीज़ है। Heart तो emotion से चलता है लेकिन balance के लिए Heart attack आ जाता है और आपका शरीर आपको इशारा देता है कि अब देखो बेटे, अब ज़रा काम धीरे करो। फिर बिस्तर पर लेट जाता है आदमी। इसी imbalance के कारण heart fisher आता है और इसी imbalance के कारण ही diabetes बीमारी होती है। क्योंकि आपका जो Pancreas है उसका working खत्म हो जाता है। आपकी kidney का working खत्म हो जाता है। इसी वजह से kidney trouble हो जाती है। Uterus में इतनी परेशानी हो जाती है कि ऐसी औरतों को बच्चे नहीं हो सकते। बाँझ हो जाती हैं। ये सारे imbalance के कारण आता है और Medical Science में imbalance की कोई भी बातचीत नहीं है। हम लोगों ने diabetes बिल्कुल हज़ार गुना ठीक किया है सहज़योग में। हालाँकि हम ठीक नहीं करेंगे। इसकी वजह है कि आप सब diabetes यहाँ इक्ट्ठा न करें लेकिन जो सहजयोगी पार हो जाते हैं उनका diabetes ठीक हो जाता है। ऐसा ही समझिये, as a by-product। Diabetes के कारण मनुष्य की आँखे कमज़ोर हो जाती हैं, आप जानते ही हैं, कभी–कभी एकदम अंधा हो जाता है। वो देख भी नहीं पाता। Diabetes से अनेक रोग और हो सकते हैं क्योंकि अंदर से मनुष्य कमजोर होते जाता है। किडनी में यूरिया बढ़ जाना और इसी प्रकार की जितनी भी left side की बीमारियाँ हैं वो right side के अतिकर्म से होती हैं। और फिर विचार का भी ऐसा हो जाता

है कि जब मनुष्य विचार को अत्यंत जोर से गति वेग से करता है तो उसके brain में भी एक तरह का momentum बन जाता है, माने फिर वो इसे रोक नहीं पाता और वो इस कदर बेतहाशा पागल की तरह से सोचने लग जाता है। अब west में इस तरह के अनेक लोग हैं। इसीलिए जहाँ पर कि रजोगुण अतिशय पे पहुँच गया, जहाँ पर कि रजोगुण उसके अंतिम extreme पर पहुँच गया, वहाँ लोग अब drugs लेने लग गए। वैसे भी रजोगुणी शराब पीते हैं, अधिकतर। रजोगुणी इसलिए शराब पीते हैं कि उनको लगता है कि इससे कुछ balance आता है। Escape है। मस्तिष्क की जो अत्यंत क्रिया होती है उससे बचने के लिए उससे escape के लिए ये लोग शराब पीते हैं। पर इसका वो इलाज़ नहीं। फिर आप तमोगुण में आ गए। और जितने अति से आप दूसरी अति में पहुँच जाइए फिर उतनी ही अति से आप उस अति पर पेन्डुलम के जैसे दौड़ते रहिए। एक अतिशयता गर आपने ले ली तो आप दूसरे अतिशयता पर पहुँचतें हैं। जब आपने अतिशय एक तरह से नशा चढ़ा लिया, काम करने का अति काम करने का, तो उन देशो में जहाँ कि अत्यंत Planning हो गई, हरेक चीज़, जहाँ पर बिल्कुल रजोगुण की अति हो गई है, वहाँ अब आपको यंग लड़कों में, 30 साल के नीचे बच्चों में, या समझलीजिए 35 साल के नीचे के लोगों में आपको 100 में 2 या 3 ऐसे मिलेंगे जिन्होंने Drug अभी तक चखी नहीं। सोचिए आप! सोचिए कितनी हद हो गई वहाँ पर ! और कम से कम 30 फीसदी लोग वहाँ पर ऐसे हैं जो regularly इसमें से regularly जिसको कहते हैं drug लेते हैं। 13 साल की उमर से लोग वहाँ drugs लेना शुरु करते हैं। ये escape हो गया शुरु। ये natural है क्योंकि जब आप इस कदर परेशान हो जाएँ अपने विचारों से कि अब जी नहीं सकते हैं तो कहीं न कहीं अपने से भागिएगा आप। अपने को देख नहीं पाइयेगा। अपने को face नहीं कर सकते। उसके साथ फिर और भी चीज़े जुड़ती जाती हैं। उसके बाद जो sex वगैरह की बातें हैं वो भी उसी का balance है। किसी भी अतिशयता में जाने पर दूसरी अतिशयता जीवित हो जाती है और वो भी इतनी बुरी तरह से आपको खीचती है कि फिर वो उधर की अतिशयता फिर आपको दूसरी side पर फेंकती है। इसी उधेड़बुन में , इसी दौड़धूप में, मनुष्य collapse हो जाता है। मनुष्य खत्म हो जाता है और इसीलिए वहाँ पर इस कदर आत्महत्याएँ हो रही हैं और लोग समझते नहीं कि जहाँ इतना affluence आ गया, जहाँ इतनी सुबधता आ गई वहाँ लोग क्यों मर रहे हैं ! उनके बच्चे हैं, वो अपने माँ बाप को छोटी उम्र में छोड़ देते हैं। बुड्ढे लोग अनाथालय में पड़े हुए हैं। छोटे बच्चे अनाथ बने हैं। शादियाँ ,एक–एक आदमी दस–दस बार करता है। उसमें भी इतनी विकृति,

मैंने कल आपसे बताया था कितने विकृत हो गए। यानि उनकी विकृति की भी हद हो गई। अब हम लोग रजोगुण पर उतर रहे हैं, ठीक है। लेकिन उसकी भी मर्यादाएँ बाँधनी पड़ेंगी। इसलिए हमारी मर्यादाएँ बाँधने के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम रजोगुण के उपर में रखा दिए गये कि अपनी मर्यादाएँ बाँधनी पड़ेंगी। हम लोगों का सारा जीवन ही मर्यादाओं मैं बंधा हुआ है। लेकिन रजोगुण की जब डोरी चढ़ती है, तब मर्यादाएँ बुरी तरह से टूटती हैं। अब आप developing countries हो रहे हैं तो developing जब आपने शुरु कर दिया out of proportion तो आपने कह दिया कि हम गरीबी हटा रहे हैं इसलिए हम development कर रहे हैं। लेकिन गर आपने 1 रुपया भी ज़्यादा अपने नौकर को दिया और वह गर शराब या सिगरेट पीने लग गया तो वह गरीब नहीं। खत्म हो गया। उसकी गरीबी खत्म हुई वहाँ पर। जब मनुष्य किसी भी व्यसन में पड़ता है तो सोच लेना चाहिए कि वो अब गरीब नहीं रह गया। व्यसनाधीन तभी आदमी होगा कि जब उसके पास थोड़ा इतना पैसा होगा। इसका मतलब ये नहीं कि किसी को गरीब रखा जाए। ये मैं नहीं कह रही। इसका मतलब ये है कि जब तक मनुष्य के अंदर ऐसी कोई घटना घटित नहीं होती है कि जिसके कारण उसका जो कुछ भी material development है, जड़ development है उसका असर उसके मानवता के साथ लगे। माने मनुष्य जो है वो बड़ा रईस हो जाए, बहुत पैसे वाला हो जाए तो जरूरी नहीं है कि वो बड़ा शरीफ आदमी हो जाए। हो सकता है कि उससे बढ़ कर दुष्ट कोई न हो। गर कोई बड़ा विद्वान और पण्डित हो जाए तो ज़रूरी नहीं है कि ऐसा मनुष्य कोई बड़ा भारी धर्मात्मा हो जाए। बिल्कुल जरूरी नहीं है। उससे बढ़ के कुरूप कोई नहीं होएगा। सुनते हैं कि जो माफिया वाले हैं उनके जो साहब जादे हैं उन्होंने Oxford University, Cambridge University और John Hopkin University सब जगह से पास किया हुआ है। और आजकल धंधा क्या करते हैं, माफिया के लीडर के लड़के हैं और सबका murder करते फिरते हैं। तो उस मार्ग का ज़रूर अवलम्बन करें जिससे मनुष्य का सम्बंध उसके मानवता के केन्द्र आत्मा से हो जाए। गर उसका उस केन्द्र से सम्बंध स्थापित नहीं हुआ तो आप उसका कितना भी development कर दें, हम आपको उदाहरणार्थ बताते हैं कि हमारे यहाँ shipping corporation में सब ड्राइवरों की तनख्वाएँ बढ़ाईं। उन्हें एक एक को हज़ार हज़ार रुपये तनख्वाह मिलने लग गई। थोड़े दिन में उन सबकी पत्नियाँ आई और कहने लगी "माताजी, साहब ने सबकी तनख्वाह क्यों बढ़ा दी?" मैंने कहा "क्यों ?" कहने लगी कि पहले 4 सौ कमाते थे तो सुख में थे, अब सब लोग शराब पीने लग गए हैं

और इन लोगों ने औरतें रख ली हैं और अब अड्डे पर पड़े रहते हैं। घर आते ही नहीं, रात भर। पहले बेहतर थे। चार सौ तक तो वो balance कर पाए उसके बाद जरा सा ज़्यादा पैसा हो गया तो शराब शुरु कर दी । इसका मतलब बिल्कुल नहीं है कि उन्हें 4 सौ ही दिया जाए, पर उनको balance दिया जाए जिसके कारण वो उस लक्ष्मी को सँवार सकें। नहीं तो पैसे वाले हो जाएँगे राक्षस पर लक्ष्मीपति नहीं। इसका connection हमारे अंदर से उस आत्मतत्व से जुड़ना चाहिए जिससे मानवता पनपती है। जब तक ये connection नहीं होगा सारा आपका education व्यर्थ है। इसीलिए सूरदास जी ने भी कह दिया कि 'सूरदास की सभी अविद्या दूर करो नन्दलाल।' सारा education प्राप्त करके भी जब तक आपने आत्मतत्व का प्रकाश उस education पर नहीं लिया तो education आपका भी व्यर्थ हो जाता है, उसका कोई भी अर्थ नहीं लगता। इसलिए अत्यंत आवश्यक है कि आप अपने आत्मतत्व को पाएँ। तब आपको हरेक चीज़ का अर्थ लगेगा जो ये सातों चक्र हैं आपके अंदर यही वो मानवता के अनेक अंग हैं जिसको पिरोती हुई कुण्डलिनी अंदर से जाती है, इसीलिए वो सबको समग्र करती है, Integrate करती है। जब कुण्डलिनी इन सबसे गुज़रती है तो इन सब तत्वों पर चलती हुई तत्व को integrate करती हुई आपके आत्मतत्व पर पहुँचती है और तब आत्मा का जो प्रकाश है इन चक्रों से गुज़रता हुआ जाता है और मनुष्य समझ लेता है कौन सी चीज़ ठीक है और कौन सी गलत है। क्योंकि गर आप कोई गलत काम करना चाहेंगे तो आप नहीं कर सकते, मुश्किल हो जाएगा। उसकी वजह ये है कि आपके अंदर एक नई चेतना आ जाती है जिसे Vibratory awareness कहिए जिसे चेतनात्मक awareness कहें। आप कह सकते हैं, जिसे आप चैतन्यमय चेतना कहें। उस चेतना के प्रकाश में आप समझ सकते हैं कि ये चीज़ अच्छी है कि बुरी है। गर आपने कोई बुरा काम किया तो आपके Vibrations एक दम से रुक जाएंगे। आप गर Vibrations से पूछे कि फलां आदमी शरीफ है या बदमाश है, गर आपके Vibration रुक गए तो समझ लीजिए ये बहुत निहायत शैतान आदमी है। यही Vibrations की वजह से आप समझ पाइयेगा कि परमात्मा है या नहीं। जितने आपके बुनियादी प्रश्न हैं absolute question उनका जवाब आपको इन्हीं चैतन्य की लहरियों से मिल सकता है। कोई चीज़ सत्य है या असत्य है ये जानना इस कलयुग में बहुत ही कठिन कार्य है। कारण हम लोग Confusion की वजह से इस कोलाहल की वजह से बिल्कुल ही अपरिचित हो गए हैं किसी भी संवेदना से किसी भी sensitivity से और इस वक्त गर ये sensitivity जो सूक्ष्म और अति सूक्ष्म sensitivity है, संवेदना है

जब आपके अंदर आ जाती है तो आपको चाहिए कि आप इसको जमाएं। कोई अगर चाहे कि थोड़ा सा हम करके माताजी क्यो नहीं हमारे अंदर हो जाता। सो बात नहीं है। हाँ आपका connection तो हम जोड़ देंगे लेकिन अभी आपका ढीला–ढाला connection है। उसको ठीक से जमाना होगा, उसको सूक्ष्म साध से जमायें। गर आपको अपने प्रति इज़्जत हो, आप गर इसको विशेष रूप से कोई चीज़ समझते हों तो आप जरूर प्रयत्न करिये। गर आप अपने प्रति जागरूक नहीं हैं और आप अपने जीवन का कोई भी अर्थ नहीं समझते और जीवन को अब तक आपने व्यर्थ ही किया है और आगे भी व्यर्थ ही करना चाहते हैं तब फिर सहजयोग आपके लिए बिल्कुल व्यर्थ है। आप आएंगे यहाँ, पार हो जाएगें लेकिन इसकी गहराई में आप नहीं उतर सकते। इसमें बैठना पड़ता है, इसकी बैठक होती है। गर आप अपने जीवन का वास्तविक अर्थ इसमें बिठाना चाहते हैं तो अपने सब सूत्रों पर आपको ठीक से व्यवस्थित रूप से पकड़ना चाहिए। और उसमें विश्वास होना चाहिए नहीं तो आपका आना जाना बेकार हो गया। जैसे कि किसी ने हाथों में सितार पकड़ ली और उसको झंकार कर दिया तो क्या वो सितार मे निपुण तो नहीं हुआ। लेकिन मनुष्य कलयुग में अपने जीवन के प्रति जागरूक नहीं है। उसको अपने प्रति सम्मान नहीं है। वो अपना सम्मान नहीं कर पाता। उसको अपने प्रति प्रेम नहीं है। उसमें आत्मसम्मान नहीं है तभी वो अपने जीवन के हरेक क्षण को व्यर्थ किए चला जा रहा है। गर वो अपने अंदर जागरूक हो और सोचे कि मैं अपने जीवन को कहाँ बरबाद कर रहा हूँ, किस जगह मैं अपने जीवन को खराब किए दे रहा हूँ, तो वो समझेगा कि अरे ये भी क्षण व्यर्थ गया, वो भी क्षण व्यर्थ गया , वो भी क्षण व्यर्थ गया ! कोई ऐसा भी क्षण हो जहाँ कोई जीवन्त शक्ति का हमारे अंदर प्रदर्शन हो या हमारे अंदर से जीवन्त शक्ति प्रकाशित हो। यही स्वार्थ है। स्व का अर्थ खोज लेना ही स्वार्थ है बाकि सब जो है ये माया का खेल है। मनुष्य सोचता है, इसमें स्वार्थ मिलेगा,उसमें स्वार्थ है, उसमें स्वार्थ है। लेकिन जब मिलता होता तो कहीं चिपक के रह जाता। कहीं भी स्वार्थ नहीं मिलने वाला। स्वार्थ स्व का अर्थ समझने से ही स्वार्थ घटित हो सकता है। और इसलिए स्व का अर्थ ही नहीं समझना है बल्कि उसमें एकाकार होना है। इसी को हम Medical terminology मे ऐसे कहेंगे कि Parasympathetic nervous system पर control आ जाना चाहिए। अब doctor कहेंगे कि ऐसे कैसे हो सकता है। हाँ इन लोगों से नहीं हो सकता है। डॉक्टरी से नहीं हो सकता है। किसी भी विद्वान से नहीं हो सकता है। किसी पढ़ने लिखने से नहीं हो सकता है। " ने योगेण न साँख्येन" किसी भी चीज़ से नहीं हो सकता है। ये

पहले ही कह दिया है। अरे कितने वर्षो पहले से कह दिया है। हज़ारो वर्षों पहले से कह दिया है कि ये ऐसे नहीं हो सकता है। इसमें माँ की कृपा चाहिए। ठीक है। आप में से जो लोग यहाँ आते हैं वे सब इसको पा सकते हैं, लेकिन हर इंसान नहीं पाएगा। ये भी बात मैं कहूँगी हरेक नहीं पाएगा। कल साहब एक साहब आए वो नहीं पाए तो बहुत मेरे पे बिगड़े। उन्होंने बहुत बहुत तमाशा किया। चिल्लाने लग गए। ये सब झूठा propoganda चल रहा है और ऐसा है और वैसा है। उन्होंने बहुत तूफान मचा दिया। जब वो आए थे तभी मैंने उनको पहले अपने पास बुला लिया। बेटे तुम मेरे पास आओ। एक तो उनको कोई बीमारी है गन्दी अंदर में और उनके अंदर भूत बाधा भी काफी थी। तो पहले मैंने बुला कर उनसे कहा कि तुम ठण्डे बैठे रहना ज़रा, लेकिन वो विचलित हो गए और चीखना चिल्लाना शुरु कर दिया। कुण्डलिनी बहुत लोगों का कहना है कि जागृत होती है तो कूदना पड़ता है, नाचना पड़ता है और फलाना होता है ढिकाना होता है। जो चीज़ आप कर सकते हैं वो कुण्डलिनी नहीं हो सकती। सीधा हिसाब है। आप नाच सकते हैं आप चाहे तो। एक आदमी नाच रहा है, समझ लीजिए। अपने आप से नाच रहा है, किसी भी वजह से नहीं नाच रहा है, तो आप कैसे जानिएगा कि ये कुण्डलिनी है, क्योंकि कोई भी आदमी नाच सकता है ? सीधा हिसाब है। कोई आदमी चिल्ला रहा है, कोई भी आदमी। दूसरा भी आदमी चिल्ला सकता है चाहे उसकी कुण्डलिनी जागृत हो चाहे न हो। ये तो सभी कुछ आप कर सकते हैं। कुण्डलिनी का स्पंदन नहीं आप दिखा सकते। आप अपनी आँख से देखिएगा कि कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि में स्पन्दित होएगी या कहीं side पर स्पन्दित होएगी। आप अपनी आँख से देख सकते हैं, ये आप नहीं कह सकते कि एक किसी portion में ही pulsation शुरु हो जाएं धड़ धड़ धड़ धड़।

ये तो आप नहीं कर सकते। कोई कर के दिखा दे। पर कोई भी चाहे नाच सकता है। कोई भी चाहे कूद सकता है। चीख सकता है। तो आप ये कहिएगा तो अकस्मात् अगर कोई चीखने लग जाए, चिल्लाने लग जाए और कूदने लग जाए तो क्या होगा ? तो उसका सीधा नाम है कि उनको भूत बाधा हो गई। जब भी कभी किसी को भूत बाधा होती है तो वो ऐसे ही करता है। उसके अंदर कोई और आदमी आने की वजह से वो आदमी चिल्लाने लगता है। चीखने लगता है, कुछ भी करने लगता है। कल हमारे बीच एक साहब आए थे मैंने आपसे बताया था कि वो पूरा हठयोग का व्यायाम मेरे सामने करने लगे, पूरा। यहाँ तक कि मैंने ही उनका आना बंद कर दिया कि अब उनकी अंतड़ियाँ बाहर निकल आएंगी। इसको भी ये

छोड़ेगें नहीं। और वो अविरत करते थे। बगैर किसी effort के करते थे उन्होंने कभी हठयोग नहीं सीखा था। उनके अंदर कोई भ्रष्ट हठयोगी घुस गया था। वो हर तरह के नक्शे मेरे सामने कर रहा था। यहाँ तक इस तरह के भूत बाधा के लोग हैं, आपको आश्चर्य होगा कि वो मेरे ऊपर अनेक कविता लिखते हैं। शुरु शुरु में जब सहजयोग शुरु किया था तब बम्बई में एक नौकरानी जो कि बर्तन माँजती थी, जिसे घाटिन कहते हैं, उसने आते ही बड़े ज़ोर ज़ोर से श्लोक गाने शुरु कर दिए। 15 श्लोक देवी–महात्म्य के मेरे सामने गाए। और पुरुष के जैसे खड़े–खड़े संस्कृत में इस तरह सुनाए कि लोग दंग रह गए कि संस्कृत में इस कदर पांडित्य इस नौकरानी में कहाँ से आ गया! ये इतने बड़े बड़े देवी के श्लोक कैसे सुना रही है! बड़े आश्चर्य चकित हो गए। उसकी वजह ये थी कि उसके अंदर एक पंडित आ गए थे और वो श्लोक सुना रहे थे। मैंने उन पंडित साहब से कहा बंधन देकर, मैंने कहा आप जाइये यहाँ से। आप इस औरत में आ कर क्यों परेशान कर रहे हैं मुझे। उसने कहा माँ मैं कब आऊँगा, फिर मैं कब पैदा होऊँगा, फिर मैं तुम्हारे कब गुणगान गाऊँगा ? इसलिए मैं यहाँ चला आया। उस समय बहुत से वहाँ हमारे सहजयोगी थे, उन्होंने भी बात सुनी। मार्कण्डेय से ले कर के उससे भी अनादि काल से लोगों ने बताया कि भूत–पिशाच आदि सब चिपक जाते हैं। जितने भी Mental diseases हैं, ESP हैं, पहले से किसी की खबर आ जानी, ये सब कर्ण पिशाचादि के बारे में अपने शास्त्रों में अनेक कुछ लिखा हुआ है। लेकिन हम कहाँ ? हम तो हिन्दी भी नहीं पढ़ते फिर संस्कृत तो बहुत दूर की चीज़ है। वो तो भाषा English लोगों की हो गई अब। हम लोग तो English पढ़ते हैं। हमारे शास्त्रों में सब कुछ लिखा हुआ है कि इस तरह की चीज़ें घटित होती हैं और उससे मनुष्य बहुत दुःखी हो जाता है। कुछ लोग हैं, अपने को बड़े बड़े लोहे के जंजीरों में अटका लेते हैं और पेड़ों पर लटका कर दिखाते हैं। ये खास कर आदिवासियों में तो बहुत यह प्रथाएँ चलती हैं। अजीब–अजीब तरह की बिल्कुल आग जला कर उसके ऊपर चलना, भूत विद्या, अफ्रीका में भी बहुत तरह तरह की होती हैं। हरेक देश में अजीब अजीब तरह की भूत विद्याएं होती हैं। तो मनुष्य ये सोचेगा कि ये तो विशेष तरह की चीज़ हो ही गई कि ये भई आग पर चल दिए। इस प्रकार अनेक तरह की चीज़ें इस देश में पहले से होती रहीं हैं और अब उन देशों में हो रही हैं जहाँ रजोगुण अति पे पहुँच गया है। रजोगुण अति पे पहुँचते ही साहब आपके देश से अनेक भूत विद्या वाले experts वहाँ पहुँच रहे हैं। सबको mesmerise करना शुरु कर दिया। सब पर उन्होंने छाप डाल दी। लाखों रुपया, करोड़ों रुपया उन्होंने बनाया, बड़ी–बड़ी जगहें बनाई। अब वही

भूत उनको खाएँगे। खाते ही हैं और वो शुरु हो गया। अब वो परेशान हैं। ये पैसे उनको नहीं बचा सकते। और उन लोगों को भी भूत खाते हैं। कल भी मैंने बताया था मैं साफ तरह से आपको बताना चाहती हूँ मुझे किसी से भी डर नहीं कि Transcendental Meditation करने वाले लोग आज मेरे पास 132 आदमी बराबर London में आए और सब कहते हैं माँ हमारे सर में blockage हो गया, माँ इसे निकाल दो।

कल मैंने बताया था आज फिर बता रही हूँ कि माँगना चाहिए, आत्मशक्ति को। आत्मशक्ति रजोगुणी नहीं होती, आत्मशक्ति तमोगुणी नहीं होती है, आत्मशक्ति सत्वगुणी भी नहीं होती है। वो गुणातीत, सबसे परे बहती हुई, अंदर से शक्ति स्वरूप अपने अंदर से बहती रहती है। वो किसी भी गुणों के अंदर लिपटने वाली शक्ति नहीं है। वो निर्वाज्य है। किसी से लिपटती नहीं। आत्मा की शक्ति धड़ धड़ धड़ धड़ अंदर से ऐसे बहती है जैसे गंगा जी। उसकी शक्ति का, उस शक्ति के कोई प्रर्दशन आप नहीं कर सकते। गर आप चाहें कि चलिए इस शक्ति को घुमा करके चार आप अगूँठी सी चीज़ें निकाल दें और ये हो और ऐसी फालतू चीज़ों में इस शक्ति को कोई interest नहीं होता। अगूँठी, अगूँठी होती क्या चीज़ है ? पैर की धूल के बराबर भी नहीं है। ये सब आपका attention खराब करने की बात है। सिर्फ सत्वगुण में रहने से मध्यम–कार रहने से, मध्यम स्थिति में रहने से मनुष्य गुणातीत हो सकता है। क्यों ? इसकी जो गति है, ये मध्यम में जो लाईन है, जिसे आप देख रहे हैं, जिसे सुषुम्ना नाड़ी कहते हैं, उसी से उसकी गति होती है, और उसी से वो आदमी ऊपर उठता है। कुण्डलिनी सुव्यवस्थित ऊपर उठती है, उसका उठाने वाला चाहिए। कुण्डलिनी बराबर अपने रास्ते से उठ कर ब्रह्मरंध्र को छेद देती है, उसका जानकार चाहिए। जिसको देखो वही कुण्डलिनी ले कर के बैठ जाने से वो कुण्डलिनी वाला नहीं होता। फिर एकाध Minister उससे चिपक जाए तो और भी अच्छा ! कोई Minister हो जाने से वो कुण्डलिनी का बड़ा भारी वो लाटसाहब नहीं हो सकता।

कबीर दास कहाँ के Minister थे ? कितनी पढ़ाई की थी कबीर दास जी ने ? कौन सी University , School में पढ़े थे वो ? तुकाराम कौन सी University School में पढ़े थे। कहाँ के वो Minister थे ? कहाँ के राजा थे वो ? इतना ज्ञान कहाँ से पाया ? ज्ञानेश्वर कहाँ के पढ़े लिखे थे ? कहाँ उन्होंने इतना ज्ञान पाया ? कौन सी पाठशाला में गए थे वो ? परमात्मा के साम्राज्य में उतरने की बात है। जब मनुष्य परमात्मा के साम्राज्य में आ जाता है तो उसके कायदे कानून

देखने लगता है तो हँसी आती है कि इस कायदे कानून का क्या करना ? अभी कोई साहब ने मुझसे कहा कि "माताजी अब इस देश में हमारे लिए कोई Leader नहीं रह गया, अब आप ही Election लड़ो।" अरे मैंने कहा "कहाँ की बात करते हो"। राजा के घर में रहने वाले लोग भिखारियों के घर में आ कर नहीं रह सकते। भिखारियों का Politics ये कि किससे भीख माँगे ? किसका रुपया बचाएँ, छी छी छी। ये सब चीज़े हमारे बस की नहीं। हम तो बादशाह आदमी हैं हमें कहाँ फँसा रहे हो हमने कहा, ये तो भिखारियों के राज्य हैं हमारे बस का नहीं। उसी में आप बादशाहत में ऊतर सकते हैं अगर आप चाहें तो अपनी बादशाहत में उतरिये। वो तभी हो सकता है जब आप परमात्मा के राज्य में आप आते हैं, तभी आप असल में बादशाह होते हैं। बाकी आप कभी बादशाह नहीं हो सकते। पैसे वाले नहीं हो सकते। कुछ नहीं हो सकते। सब व्यर्थ है, सब भिखारी हैं। दीन बनकर खड़े हुए हैं कि साहब हमारा ये काम करवा दीजिए। घिघिया रहे हैं भगवान से भी जा कर के कि भगवान मुझे तुम फलानी चीज़ दे दो।

बादशाहत में आदमी अपनी शान में खड़ा रहता है। उसकी शान अत्यंत सौम्य और प्रेममयी होती है। अत्यंत दयामयी, कल्याणमयी और मंगलमयी होती है। परमात्मा के जो rules और regulations हैं और उसकी जो planning है उसके साथ एकाकार होना चाहिए। पृथ्वी जिस तरह से अपने प्रेम को उगाल रही है संसार में और फैला रही है उस पृथ्वी तत्व के proportion में उस पृथ्वी तत्व के उगालने के proportion में ही आपको production करना चाहिए। पृथ्वी जिस तत्व से उगाल रही है, आज जिस तरह से वह सृष्टि पर बना रही है उसके out of proportion आप बनाना चाहते है, रजोगुण में। माने London में गर आप जाएँ तो शराब पीने के सिर्फ गिलास आप लेने जाएँ तो कम से कम 15 हजार आपको खर्चा करना पड़ेगा। पहले तो शराब आप बनाओ जो कि बिल्कुल ही गलत चीज़ है फिर उसको पीने के लिए ज़रूरी है उसके आप उसके प्याले बनाओ। England में गर Scotch Whisky बंद हो जाए तो देश डूब जाएगा क्योंकि उनके पास दो ही चीज़े हैं, एक तो उनका Scotch Whisky है दूसरे उनका cristle है। जब मनुष्य बाहर बढ़ने लगता है तो वह दूसरों की कमज़ोरियों पर ही चलने लगता है। गर कमजोरी नहीं हो तो क्या दरकार होगी उसे चीज़ों की। उसको कमजोर बना दिया जाता है। जिस प्रकार भई कि औरतों में है कि भई तुम्हारी body ऐसी होनी चाहिए, तुम्हारी शक्ल ऐसी होनी चाहिए, तुम्हारे अन्दर ये चीज़ होनी चाहिए। औरतें लगी खर्चा करने। उनके अंदर वो कमजोरी डाल दी। Race का घोड़ा जरूर खेलना चाहिए गर आप

London में रहते हैं नहीं तो आप वहाँ के सभ्य नहीं हैं, Elite नहीं हैं आप। आपको Race के घोड़े का सब आना चाहिए। गर आप Paris में रहते है तो आपको शराब के बारे में सब पता होना चाहिए कि शराब का मतलब क्या होता है, उसको कितना मिलाना चाहिए, उसमें कितना घोलना चाहिए। मुझे आश्चर्य हुआ कि यहाँ पर भी Government का जो College है जहाँ पर कि बच्चों को Hotel Management सिखाते हैं उसमें दो पेपर होते हैं जिसमें शराब के बारे में सिखाया जाता है कि कौन सी शराब दी जाए और कौन सी नहीं दी जाए। नहीं तो आपके Hotel ही नहीं चलेंगे। होटल में गर में शराब नहीं पियेंगे तो वो रहेंगे ही नहीं। तो पैसा कैसे आएगा ? आपके अंदर जितनी कमजोरी होएगी, उतना ही रजोगुण प्रबल हो सकता है। गर आप 2 ही चार कपड़ों में रह लेते हैं और मस्ती में रहते हैं तो इनकी कपड़े की मिलें कैसी चलेंगी ? गर आप सादगी से रहते हैं तो इन लोगों का व्यापार कैसे चलेगा ? अमेरिका गर जाइएगा आप तो 50 तरह के हैन्डलज होतें हैं। यहाँ तक कि खपरैल जो सर पर होती है, वो हजारों तरह की होती है। किसी के Bathroom में गर जाएँ तो पहले पूछ लीजिए कि कौन सा knob दबाएँ, नहीं तो आप अंदर पहुँचे और गए खड्ड में। इतना तमाशा करने की क्या जरूरत है ? इस कदर आराम पसंदगी, इतना ज्यादा comfort , मनुष्य को क्या जरूरत है कि हर समय वो लोटता रहे ? क्योंकि शराब के बाद लोटना जरूरी है। लोटने के लिए comfort जरूरी है और comfort जरूरी है तो उसके लिए हर तरह की चीज़ में कुशन बनना चाहिए। ये फलाना ढिकाना बनना चाहिए, उसमें वो चीज होना चाहिए। इतनी ज्यादा विद्रूपता है, मैं आपसे कहती हूँ, इतनी Ugliness आ गई मनुष्य के अंदर और उसमें शर्म नहीं आती कि उसने बड़े–बड़े Science बनाएँ है। शराब पिलाने के भी Science बनाएँ हैं। फिर औरतों को किस तरह से खूबसूरत रहना चाहिए ? उनको tanning करना चाहिए। चाहे उसमें शर्म उतर जाए उनकी, हर्ज नहीं पर उनका body जरूर tan होना चाहिए। उन्होंने एक चक्कर चला दिया वहाँ tanning का। अरे भई आपको अगर सूर्य की रोशनी लेनी है तो बदन पे आपके गर कपड़ा रहे तो कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। सूर्य की रोशनी तो आपके अंदर जाती है। लेकिन tanning होना चाहिए, उसके लिए इस तरह नज़ारे होते हैं कि आप चल नहीं सकते किसी भी sea-shore पर। एक दिन ये सारे sea-shore सुकड़ करके इन सारी औरतों को खींच लेगा समुद्र अपने अंदर। तब इनकी अक्ल ठीक होगी। निर्लज्जता संसार में फैलाना चाहिए क्योंकि निर्लज्ज नहीं होएगें तो इनके cosmatics कैसे बिकेंगे ? इन्होंने जो जो चीज़ इन औरतों को बेवकूफ बनाने

के लिए बनाई हुई हैं वो कैसे लेगें ? अब तो कुछ–कुछ जरा सा अपने देश में अक्ल आ गई है औरतों को, पहले तो मैं देखती थी कि यहाँ पर एक डालडा का टिन लगा कर औरतें चलती थी। तो मैनें कहा, इस पर एक lecture दिया कि बाबा कम से कम डालडा का टिन कम करो। हील्ज़ पहनेंगी तो इतनी ऊँची–ऊँची पहनेंगी ! आखिर कोई आप ऊँट बनना चाहते हैं ? आप इंसान हैं भगवान ने आपको कायदे का बना दिया है। किसलिए इतने परेशान हैं ? Beauty Contest बना रहें हैं, बताइये आप ! बिल्कुल अजीब, बहुत ही ज्यादा विकृत और विद्रूप चीज़ है ये, क्योंकि जब असली रूप होता है तो मनुष्य रूप को देखते ही सब पूर्णतः संतोष में आ जाता है। ये रूप का लक्षण है कि बस अब रूप का अंत आ गया इससे आगे रूप नहीं है। वही असली रूप होता है। लेकिन ये तो ऐसा रूप है कि अभी चले, एक दूसरा देखा उसके बाद दूसरा बंदर देखा, उसके बाद तीसरा बंदर देखा। बंदरियाँ ही बंदरियाँ सब तरफ भरी पड़ी हुई हैं। मैने कहा यहाँ कोई सती साध्वी एक भी नहीं है, सब बंदरियाँ ही हैं। कोई जो इसके गर्दन पर कूद रही है, कोई उसके गर्दन पर कूद रही है। और उस पर बड़ा घमण्ड है उनको कि हम तो बहुत ही ज़्यादा , वाह वाह advance हैं ! ऐसी गधापंथी अपने यहाँ की औरतें न करें तो बड़ी मेहरबानी हो जाए। अभी भी इस देश में बड़ी देवियाँ हैं और बड़ी पूजनीय देवियाँ हैं। इसीलिए आदमियों की कितनी भी बड़ी गलतियाँ होने पर भी ये देश रुका हुआ है। आदमी लोग तो सब साहब ही हो गए, उनको तो कोई कुछ कह नहीं सकता, उनको तो कहना बहुत ही मुश्किल हो गया है। सब साहब हो गए हैं। अब देसी चीज़ जो है वो बिल्कुल बंद। गर आप, दिल्ली में मैने सुना कि आप कहीं जाइए और दारू नहीं पीते हैं तो लोग हँसते हैं आप के ऊपर कि साहब अभी तक आप पूरी तरह से बंदर नहीं बने। और जब तक बंदरों की दुमें नहीं कटती तब तक और भी उनको खुशी नहीं होती कि जब तक अपने दो चार लड़कियाँ इधर–उधर से ला करके और नचाया नहीं तो आप गए काम से गए। आजकल यहाँ के बुड्ढों को शौक हो गया है कि हम उल्लू बनें। वो एक हमने नागपुर हमारा है देश जहाँ हम रहते थे, वहाँ के लोग कुछ क्रूर जरूर हैं पर कभी–कभी पते की कहते हैं कि 'बुलबुलों को हसरत हुई कि उल्लू न हुए।' तो बजाए इसके कि समझदारी रखें, कुछ शान्ति रखें, कुछ शान अपनी रखें, बुर्जुगों को आजकल ये शौक हो रहा है कि हम जवानों के जैसे जा करके वहाँ वो नाचते कूदते हैं। क्यों न लोग wig झपरे रख करके, उस तरह से हो जाएँ। एक साहब मुझसे कहने लगे कि साहब इसमें क्या हर्ज आपको है कि अगर हम hippy बन करके घूमें तो आपको क्या हर्ज है ? साहब मैंने कहा मुझे कोई हर्ज नहीं, लेकिन मैं

आपसे इतना बता दूँ कि इस वक्त आप ऐसे लग रहे हैं जैसे कोई पिशाच होता है और अगर आप पहले से ही पिशाच बने घूम रहे हैं तो रास्ते में गर कोई पिशाच आपके ऊपर बैठ जाए तो वो दोष किसका होगा ? पिशाच का नहीं आप ही का होएगा। क्योंकि वो देखेगा कि ये अच्छा एजेन्ट मिल रहा है अपने ही जैसा जिसमें जम जाएंगे पूरा। आपकी शक्ल ऐसी है कि उससे सिर्फ भूत ही आकर्षित होएंगे। ये सब रजोगुण की कमालात है कि आपको पिशाचों जैसे घूमना है तो आप रजोगुणी बनिये। Development करना है तो करिए। जो Pant दस दस दिन नहीं धुलती , एक Lady तो सुनते हैं कि उसने पहनी है तब से उसने धोई ही नहीं कितने दिन से, उसी के साथ नहाती है और सुखाती है। एक एक तमाशे सुनिये ! उनकी highest development आपसे बताएं, अब वहाँ पर पनक्रॉप एक नया निकला है। शायद आप तक पहुँचा नहीं अब तक। हो सकता है पहुँच जाए। उसमें सिर्फ कुछ बड़ी–बड़ी पिनें ले कर के यहाँ से सिल दिया जाता है दोनों side से, बड़ी बड़ी पिने। नाक में लाल, यहाँ पर shocking Pink, यहाँ पर हरा। ये सब पत्तियाँ हैं इनको निकाल निकाल कर ज़ोड़ दीजिए आप उसके बाद घूमा करते हैं और वहाँ कौन घूमते हैं ? बड़े बड़े प्रोफेसर। हमारे यहाँ कुछ प्रोफेसर बैठे हैं, सम्भल के रहिएगा। और एक साहब तो, आपको आश्चर्य होगा कि बड़े विद्वान मैं उनको समझती थी, एक पार्टी में आए तो ये सब करके आए। मैंने कहा ये क्या ? कहने लगे कि आजकल मैंने पनक्रॉप join कर लिया है। मैने कहा, हैं ! आप तो काफी अक्लमंद लगते थे, अब आप भी पनक्राप में चले गए हैं ! कहने लगे आपको भी बड़ा मजा आएगा आइये, बड़ी शान्ति मिलती है उसमें। मतलब ये है कि कुछ तो भी nuisance जिसको कहते हैं कि महामूर्ख बन कर ही कोई गर अपनी तरफ देखे तो बड़ा अच्छा है। जोकर ही बन जाओ, वैसे तो कोई देखता नहीं है, अब क्योंकि सभी hippy बन गए तो सभी एक ही जैसे ही दीखते हैं। तो कोई तो विशेषता आनी चाहिए। तो मुँह में पिनें डाल–डाल कर यहाँ से यहाँ तक Pin बड़े बढ़िया और ये बड़ी Common sight है वहाँ पर। मैं आपको सिर्फ विनोद के लिए नहीं कह रही हूँ। असलियत है। और देखते ही आप अचम्भे में देखते हैं कि या तो हम पागल हैं या ये पागल हैं। और वो हमारे ऊपर सोचते हैं कि हम बहुत inhibited लोग हैं। हमें अक्ल ही नहीं है कि हम इस तरह का कोई सा भी अच्छा कार्य नहीं कर सकते जिसमें हम अपने को let loose कर दें। हम इतने inhibited हैं। हमें कोई स्वतंत्रता की कल्पना ही नहीं।

स्वतंत्रता का मतलब बेहूदापना, उच्छृंखलता नहीं है। महामूर्खता तो बिल्कुल भी नहीं है। स्वतंत्रता बहुत इतनी बड़ी चीज़ है। स्व के तंत्र पर चलना ही

स्वतंत्रता है। और स्व का तंत्र ये है जो आपके सामने है। जो मनुष्य अपने को स्वतंत्र समझना चाहता है उसे पहले पार हो जाना चाहिए नहीं तो वह स्वतन्त्र नहीं। स्व का तन्त्र समझ लेना चाहिए और यही उसका तंत्र है। न कि तांत्रिकों का negative जिसमें स्व ही उसमें खत्म हो जाए। जिससे स्व पूर्णतया स्वतंत्रता में आ जाता है। जब वो पूर्णतया स्वतंत्र होता है तभी उसके अंदर wisdom पूरी तरह से संतुलित बैठ जाता है। वो जो भी करता हैं पूर्ण स्वतन्त्रता से करता है लेकिन उसके एक–एक इशारे में , एक एक इशारे में भी स्वतंत्रता के अनेक प्रकार दिखाई देते हैं। वो किसी से भी नहीं डरता और हमेशा नतमस्तक रहता है। प्रेम में वो स्वतंत्र होता है। अत्यंत प्रेममय व करुणामय वो होता है। ऐसे स्वतंत्र आदमी को प्रणाम करना चाहिए। बजाए इसके कि जो अपने आपको स्वतंत्रता के नाम पर गधे से मूर्ख और मूर्खों से पता नहीं और क्या हो जाएगें। मेरे पास तो ऐसे जानवर भी नहीं जिनकी मैं आपको प्रणाली बताऊँ। कोई मुझे ऐसे शब्द भी नहीं मिलते जो मैं इनका वर्णन करूँ क्योंकि कलयुग से पहले ऐसे कभी हुए ही नहीं थे। इसलिए नए शब्दों के coinage की जरूरत है और जो शब्द बनाने वाले थे वही ये हो गए तो अब कौन उनके शब्द बनाएगा। ये हालत आ गई है कोई संस्कृत भाषा में ढूँढे से मिले तो मुझे बताइयेगा क्योंकि बड़ा ही मुश्किल है। जब संस्कृत भाषा प्रचलित थी तब ऐसे गधों के बारे में किसी ने सोचा भी नहीं। पुराण में भी वर्णन है कि कलयुग आएगा लेकिन इस तरह के महामूर्ख संसार में विचरण करेंगे ऐसा पुराण में भी नहीं बताया गया था ये तो देखते ही बनता है। और पढ़े–लिखे, पढ़े–लिखे और अति पढ़े हुए लोग ये काम कर रहे हैं ! इसको आप क्या कहिएगा ?

ये रजोगुण का प्रादुर्भाव है। अब आप का देश Develop हो रहा है। होइये साहब, लेकिन ये देख लीजिए नमूना। आप जरूर Develop होइये लेकिन ये नमूना देख कर चलें कि वो जिस गड्ढे में पड़े हैं उधर आप जाकर न कूदिए। एक तो रजोगुण में सबसे बड़ा जो दोष है कि ये अहंकार पे चलता है। मतलब Ego oriented है रजोगुण। जब Ego orientation शुरु हो गया तो अहंकार ऐसी चीज है कि उसमें आदमी जो भी करता है उसमें अपनी बेवकूफी वो देख ही नहीं सकता, या कुछ भी करता है वो बिल्कुल सही क्योंकि अहंकार उसमें तृप्त होता है। अपने यहाँ रामायण में बड़ा सुन्दर वर्णन है कि जिस वक्त नारद मुनि स्वयं ही एक चक्कर में पड़ गए। ऐसे ही चक्कर हैं, ये रजोगुण के चक्कर हैं इसको तो समझने के लिए अपने को देखना चाहिए और कहना चाहिए, 'हे भगवान ये मेरा अहंकार मुझे गधा बना रहा है।'

और अहंकार आपको गधा बना के इतना छोड़ देता है कि अंत में वो आप घबराहट के मारे ही उस गधे को अपने ऊपर लिए चलते हैं। क्योंकि Ego oriented है इसलिए बहुत ज्यादा dangerous है। अगर ये Ego oriented नहीं होता तो इतना dangerous नहीं बैठता। क्योंकि मनुष्य कभी भी अपने को गधा कह नहीं सकता। सब दुनिया पे हँसेगा, लेकिन खुद ही अपने सर पर गधा ले कर चल रहा है, उसे नहीं देखेगा। ये Ego की विशेषता है। Ego में एक अंधापन आ जाता है और इसलिए ये बहुत ही खराब चीज़ है। हाँ अगर Super Ego हुआ जो कि दूसरी side में अपने सर में develop हो सकता है, तमोगुण की वजह से, उसमें आदमी पीड़ित हो सकता है। उसका बदन काँप सकता है। उसमें तकलीफें आ सकती हैं। उसको बीमारियाँ आ सकती हैं। उसको Physical problem आ सकता है पर Ego-oriented आदमी में कभी ये तकलीफे नहीं होगीं जब तक उसका heart trouble न आए। एक ही है कि heart ही stop हो जाएगा बस। Ego oriented आदमी को कभी भी कोई भी इस तरह की चीज़ नहीं मिल सकती है जैसे कि तमोगुणी के रुकावट हर समय हर जगह होती है। तमोगुणी एक तरह से बेचारा ज्यादा ठीक है क्योंकि कम से कम उसकी ठोकरों से वो बचते रहता है। समझ लीजिए अभी यहीं एक देवी जी बैठी हुई हैं जिनको कि बाधा ने पकड़ लिया। वो एक आदमी के पास गई। उन्होंने कोई जन्तर मंतर करे तो बाधा ने पकड़ लिया, भूत ने पकड़ लिया। तो उनका बदन ऐसे ऐसे एंठने लग गया। चलो भई छोड़ो इसे। पर अगर आप किसी Egoistical आदमी के सामने जाइये तो उसका Ego आपके अंदर भी घुस जाएगा। ये हैं तो मैं इसके बाप से भी बड़ा हूँ। चलिए उसने एक बोला तो मैंने 10 बोला, वो कौन होते हैं , मैं उसका नाना हूँ। शुरु हुआ, वो जितने गधे हैं आप उसके double नाना गधे हो गए। और उसमें उसके साथ एक और बीमारी लग जाती है जो बड़ी ही सूक्ष्म है, उसे समझना चाहिए। यश ! उसमें एक बीमारी और लग जाती है। यश, Success। उसके साथ अगर Success लग जाए तो बड़ी ही problem हो जाती है। फिर तो आदमी को गधे पर से उतारना असंभव है। Success अगर लग गया तो बड़े ही Successful थे वो। फिर उनके मरने के 30–40 साल बाद निकलता है कि उन्होंने ये गधापन्थी करी, ये गोबर खाया। ये हालत अपनी खराब की। वो ऐसे थे और वो वैसे थे। तो लोग कहते हैं कि वो तो ऐसे होंगे नहीं। क्योंकि Ego में आदमी कुछ भी कर सकता है, कहीं भी जा सकता है। कैसे भी काम कर सकता है। बहुत से लोग हैं Ego में अक्ल लगा करके चोरी छिपे करते हैं और कुछ लोग हैं खुले आम करते हैं अगर expose हो जाएँ तो। लेकिन सबके अंदर एक तरह की एक बड़ी दानव

शक्ति कार्यान्वित है और इतनी महामूर्खता उस दानव शक्ति में है, जैसे कि मैंने आपसे कल ही बताया था कि लंदन में 77 साल की बुढ़िया नानी अपने Grand child से शादी करती है, उनको कोई आश्चर्य नहीं है और नाना जी अपनी नातिन से शादी करते हैं। इसमें उनको कोई हर्ज नहीं है और उसके लिए अब वहाँ कायदा पास करवाने वाले हैं और उसके लिए बड़ा वहाँ movement हो रहा है कि इस तरह का आप हमारी स्वतंत्रता पर आप आक्रमण कर रहें हैं। ऐसे बेवकूफों से कोई सीखने की जरूरत नहीं। उनके पास कुछ भी अपने को देने की चीज़ नहीं है। आप मेहरबानी करके उनसे कोई चीज़ नहीं सीखें। और ऐसे पैसे की भी अपने को जरूरत नहीं जिससे हम महामूर्ख हो जाएँ। ठीक है, Development करना है तो गाँधी जी के रास्ते बहुत अच्छे बने हुए हैं। उनके रास्ते से बनाओ। अपने से चलो। अपने पास जो सम्पदा है, अपने पास जो सत्ता है उसे ले कर चलो। हम लोग कितने बेवकूफ बन रहें हैं, ये भी आप समझ लीजिये। हमारे पास अगर हम पीतल के बर्तनों में खाते हैं तो बड़े गर्व की बात है कि हमारे पास इस कदर पीतल है, और ये लोग प्लास्टिक में खाते हैं और हम चाहते हैं कि हमारे यहाँ प्लास्टिक आ जाए ,नहीं तो stainless steel आ जाए। Stainless steel भी कोई खाने की चीज़ होती है जिसको कि लोहा कहते हैं। लोहे में लोग खाएंगे ऐसा पहले कहते थे पुराण में। हम लोग जब छोटे थे तब कोई कहता था कि ऐसा ज़माना आएगा जब लोग लोहे में खाएंगे। तो हम लोगों की माँ वगैरह कहती थी " हे भगवान'! ये कैसा जमाना आएगा, ये ऐसी दुर्दशा हो जाएगी, ऐसी गरीबी आ जाएगी कि लोग लोहे में खाएंगे ! हे भगवान! कॉसे में खाएं, पंचधातु में खाएं, कुछ बढ़िया चीज़ में खाएं। ये क्या ? तो अब Stainless Steel में लोग खाते हैं ! मैं वहाँ से लंदन से आती हूँ तो मुझे लोग लिखते हैं कि भई नाएलोन की वहाँ बढ़िया साड़ी मिलती है, American जार्जेट लेकर आओ। वहाँ सब लोग हँसते हैं, English लोग, कि अरे क्या! आपके यहाँ कॉटन इतना बढ़िया होता है और आप ये रद्दी कहाँ ले जा रहे हो वहाँ ? अपने यहाँ कोई अगर कॉटन पहने तो लोग हँसेंगे कि ये क्या कॉटन पहन लिया ! वो दिन दूर नहीं जब कि खादी सारे संसार में छाएगी। वो दिन बिल्कुल दूर नहीं। आप मेरा विश्वास मानिए। क्योंकि इसके अंदर हाथ से बने हुए Vibration हैं और वो लोग इस चीज़ की महत्ता समझते हैं। इस खादी की महत्ता समझते हैं लेकिन हम लोग बेवकूफ हैं जो इस नायलोन को बड़ी भारी चीज़ समझते हैं। आप जानते हैं कि नायलोन से अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। ये मनुष्य के विरोध में है लेकिन हमें नायलोन क्यों पसंद है ? क्योंकि हम लोग बड़े भारी अंग्रेज बनते हैं। आप 10 के जगह 2 साड़ियाँ पहनिये

लेकिन कायदे की साड़ी पहनिये। आप 10 की जगह 2 कपड़े पहनिये। अब अपने यहाँ लोगों को आश्चर्य होता है कि कॉटन से टैरीकॉट महँगा है। उनको बहुत ही आश्चर्य होता है। ऐसे कैसे सम्भवनीय है ? वहाँ गर कॉटन आपको 10 पाउँड का मिलता होगा तो टैरीकॉट 2 पाँड का मिलता होगा। कोई गर कॉटन कहीं मिले कि कॉटन मिल रहा है तो लोग दौड़े जाते हैं। कहते हैं उसका feel कितना सुन्दर है ! हम लोग अभी भी इस्त्री पे इस्त्री मारे जाते हैं। वे लोग कहते हैं कि इतना ज्यादा Suited booted लोगों से हमारा जी घबराता है, घुटता है। काहे को इस्त्री करते रहते हो सुबह से शाम तक ? अरे अपने मन की भी कोई इस्त्री करो। बाहर की झकपकाहट जिसे हम लोग सोचते हैं, कि बहुत बड़ी चीज़ है, उस पर लोग हँसते हैं। अंग्रेज लोग बहुत हँसते हैं। हमारे कुछ English शिष्य यहाँ आए थे तो कहने लगे हमें बम्बई ज़्यादा पसंद है बनिस्बत दिल्ली के। ठण्ड में थे न। मैंने कहा क्यों ? कहने लगे यहाँ Every body is so Westernised, horried ! मैंने कहा Westernised ! How do you say ? कहने लगे ये सब लोग Suit डाले घूम रहे हैं ! उन लोगों की समझ में नहीं आया, वो इस चीज़ को समझ नहीं पाए। तो मैंने उनसे कहा तुमको भी गर इन पर रोब झाड़ना है तो तुम भी suit पहन कर आना नहीं तो उन पर रोब नहीं पड़ेगा। जब University जाना तो best suit में जाना। अंग्रेज गर suit में आया तो उसी के पैर पे हमारा हिन्दुस्तानी गिरता है और ऐसे वैसे नहीं गिरने वाला है गर तुम ऐसे वैसे कपड़े पहन कर आओगे। तुम नहीं समझते हो अभी भी हमारे अंदर वही Slavish mentality है हजारों वर्षो की चली आ रही, वो छूटने नहीं वाली। हमारे जो बाप दादे हो गए वो ये सब पहनते नहीं थे लेकिन इंसानियत का मादा उनके अंदर बहुत ज़्यादा था। एक–एक आदमी अगर सोचिए तो legendry कहना चाहिए, क्या लोग थे ! एक बार शब्द दे देते थे तो उसी शब्द पर चलने वाले। जिनके बारे में सारे संसार में गुणगान गाते थे कि हिन्दुस्तान का आदमी एक होता है तो वो यहाँ के हज़ारों बेकार लोगों से अच्छा होता है। वही हिन्दुस्तान की आज ये दुर्दशा हो गई। ये रजोगुण की कृपा है।

स्वतंत्रता से पहले हम लोग बहुत अच्छे थे जब गुलाम थे, जब कंधे से कंधे लड़ाए थे और सबसे जाकर वहाँ पर सारे संसार के देशों से हमने अपनी स्वतंत्रता की मांग उठाई थी। वो हम लोगों से अलग थे और ये आज रजोगुण की गुलामगिरी में हम लोग जो फँसे जा रहे हैं, materialism के, इस कदर गंदे हम हो रहे हैं, इसको समझने की जरूरत है। रजोगुण में उठते वक्त रास्ते में ही सत्वगुण की दिशा है। रुक जाइये। रुक जाइये

वहाँ पर। उनका extreme देखते हुए बीच में आ जाइये। सत्वगुण तभी आता है जब रजोगुण के साथ धर्म चलता है और धर्म हमारे पेट में नाभी चक्र में उसके चारों तरफ होता है। लक्ष्मी का स्थान है। लक्ष्मी रजोगुण की ही सत्वगुणी व्यवस्था है। मैंने आपसे लक्ष्मी के बारे में पहले बताया था, कल भी बताया था कि लक्ष्मी स्वरूप जो मनुष्य होता है उसके एक हाथ से दान, दूसरे हाथ से आश्रय होना चाहिए। वो स्वयं माँ स्वरूप होना चाहिए, उसके दो हाथ में कमल के फूल जैसी उसके अंदर सम्मान और उसके अंदर प्रेम की आभा हर समय रहनी चाहिए। जब उसके घर के दरवाजे पर जायें तो कहे कि " आओ बेटे कहाँ से आए, कैसे तकलीफ से आए हो, बैठो, यहाँ रहो। मैंने अभी किसी एक रईस आदमी से कहा कि इसको लक्ष्मीपति कहते हैं। कहने लगा बहन जी अगर कोई चोर आ गया तो ?" मैंने कहा, " चोर भी आ गया तो भी कोई हर्ज नहीं, बिठाओ उसे। प्रेम से बिठाओ।" उसकी चोरी बदल जाएगी। चोर कभी भी शरीफ आदमी की चोरी नहीं करने वाला। बहुत ही गया–बीता होगा तो जाने दो फिर उसको। उसकी कर्म गति से क्या। गर चोर आ जाए आपके घर में तो रख लीजिए उसको, प्रेम से स्वीकार्य करिए। वो 10 बार सोचेगा, चोरी करूँ कि नहीं करूँ उस आदमी की, ये तो मेरे बाप जैसा है ? उस आदमी को पैसे वाला कहना चाहिए न कि उस आदमी को जो दुनिया भर में सबको ही अपमानित करते फिरता है। जो आदमी हृदय से कमल जैसा है अत्यंत सुन्दर और गुलाबी कमल के जैसा, अत्यंत प्रेममय, भावनापूर्ण और जिसमें पूर्ण अपनापन बहता हो। जिसके अन्दर भौंरे जैसा भी काला, गढ़ने वाला प्राणी भी जा कर आराम से सो सकता है, उस आदमी को लक्ष्मीपति अपने यहाँ कहते हैं। लक्ष्मी स्वरूप हुए बगैर ये रजोगुण आपको लाभदायक नहीं होगा। वो यूँ ही trustee की तरह से जीता है। उसका जो भी पैसा है उससे वो व्यसनाधीन नहीं होता। अपने बच्चों के लिए वो पैसा नहीं छोड़ता, उसको व्यसन आदि में नहीं डालता। उस पैसे का उपयोग वो दुनिया के कल्याण के लिए करता है। वो एक trustee स्वरूप होता है। शरतचन्द्र की एक बड़ी सुन्दर कहानी मैंने पढ़ी थी कि उन्होंने लिखा कि हम लोग एक टोले के लड़के एक बड़े भारी धनी के पास पहुँचे। तो उन्होंने पूछा कि तुम लोग क्या करना चाहते हो ? तो हमने उन्हें कहा कि हम लोग एक ड्रामा करना चाहते हैं और ऐसा करना चाहते हैं और उसमें बहुत modren life दिखाना चाहते हैं और आप हमें कुछ रुपया दीजिए। उन्होंने कहा बैठो–बैठो। बहुत बिठाया, उसके बाद चवन्नी उनको पकड़वा दी। तो ये लड़के बड़े गुस्से हो गए कि बड़ा ही कंजूस निकला। चवन्नी हमें पकड़वा दी। उसके बाद एक स्त्री आई, बेचारी बड़ी बूढ़ी थी। आई, कहने लगी

कि पता नहीं कुछ पचास वर्ष पहले मेरे पति ने आपके पास कुछ रुपया रखवा दिया था। उसके बाद हम लोग परदेस चले गए। वहीं मेरे पति की मृत्यु हो गई। उनके उसमें एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि उनके पास बहुत रुपया मैं छोड़ कर आया हूँ, तो तुम हो सके तो वो धर्मात्मा हैं, उनके पास चले जाना। कहने लगे अच्छा! पत्र तो दिखाइये। पत्र देखा उसकी तारीख देखी। कहने लगे ' भई देखो, वो कहाँ उनका है, वो निकालो, फलानी तारीख को, फलाने साल में। और पचास साल पहले की बात है तो सब फाइलें निकलवाओ, और बैठे वो वहाँ देखने के लिए। वो भी बड़े वयोवृद्ध थे। वो भी 75–80 साल के थे। लेकिन बैठे कहने लगे " बहन अभी रुकी रहो, यहीं खाना खाना। यहीं रहना। इत्तफाकन उनको 2–3 घंटे में उसका पता लग गया। 2–3 घंटे में उनको पता लग गया कि ये जो है, ये रुपया दिया गया था। उन्होंने वो सारा रुपया उस औरत को वापिस करके सूद सहित वो वापस कर दिया। ये लक्ष्मीपति का लक्षण है कि घर्म में खड़े हैं वो। पैसा एक trustee की तरह इस्तेमाल करते हैं। बड़ी भारी मैं, शरतचंद्र को इसलिए मानती हूँ कि मनुष्य का जो है उसको शरतचंद्र ने इतना सुन्दर निभाया है, उसके धर्म–तत्व को इतना सुन्दर दिखाया है। लेकिन हम शरतचंद्र को पढ़ते नहीं। हम तो रजनीश को पढ़ते हैं। रजनीश को। ये हमारे आजकल के सबसे बड़े हीरो हैं, दढ़ियल महाराज और उनके चप्पा गोती। ये हमारे लिए आजकल के सबसे बड़े हीरो साहब हो गए! अपने संस्कृति में कभी भी पैसे वाले की महत्ता नहीं गाई गई। कहीं भी नहीं। हमेशा उसी मनुष्य की गाई गई जो धर्मात्मा है। और आप को भी पता होना चाहिए कि इस देश में आपकी महत्ता कभी भी नहीं गाई जाएगी। आप चाहे कितने भी मन्दिर बनवाइए और कितने भी फालतू की चीज़ें करिए। आपकी तभी महत्ता गाई जाएगी जब आप धर्मात्मा हों। चाहे आपके पास पैसा है तो उसको धर्म में लगाइये और जब आप खर्च करिए तो किसी से कहिए नहीं कि मैंने आपके लिए खर्च किया। देते रहिए। देते रहिए। सिर्फ आप बीच में इसलिए खड़े हुए हैं कि आप देखते रहें कि पैसा जो है वो ठीक जगह पर पहुँच रहा है। कुछ कुछ लोग तो इस कदर परमात्मा में लीन हो जाते हैं कि वो ये भी नहीं देखते। जाने दो, जिस जिस को जाता है जाने दो। लेकिन गर कोई धर्म पुरुष दान करता है तो उसका पैसा कभी भी दुर्व्यवहार में नहीं जाता। दुष्टों का पैसा जरूर दुर्व्यवहार में जाएगा लेकिन धर्मात्माओं का नहीं जाएगा। उसमें भी एक बड़ी भारी आकर्षण शक्ति होती है जिसे हम कहते हैं Vibrations, चैतन्य की लहरियाँ। हरेक चीज़ में चैतन्य की लहरियाँ होती हैं। उसका देने वाला और करने वाला होना चाहिए। आपके अंदर भी चैतन्य की लहरियाँ उत्पन्न

हो सकती हैं गर आप इसको पा लें। आप में से अनेक लोगों के अभी हाथ मैं ठण्डा ठण्डा आने लग गया है। कह रहे हैं। ऐसे ही आप हाथ रखें फिर से। आज मैं आपको बचे हुए तीन चक्रों के बारे में बताऊँगी क्योंकि कल मैंने आपको नीचे वाले चार चक्रों के बारे में बताया था। अगले साल शायद मैं ज़्यादा दिन के लिए Delhi आ जाऊँगी, देखिए। लेकिन Delhi वाले और बम्बई वाले व कलकत्ते वाले ज़रा जरूरत से ज़्यादा बड़े लोग हैं। तो उनके लिए अभी 16 राक्षस पैदा हुए हैं। 6 राक्षस ही नहीं वो बराबर अपना मौके से आ जाते हैं। जहाँ जहाँ बैठे हुए हैं लाला–हमके धमके। रायबहादुर हमके ठमके, फलाने minister, फलाने ढिकाने, उसके लिए सब बने हुए हैं वो आ करके, बराबर जमे हुए हैं सब जगह। मैं गरीब सहजयोगिनी हूँ। मेरे लिए तो देहातों में अनेक लोग मिल सकते हैं। देखिए दिल्ली शहर में कहाँ तक लोग प्रगति करते हैं, कहाँ तक बढ़ते हैं, कहाँ तक सच्चाई को पाते हैं। ज़्यादातर लोग तो जो फैशन चलता है वहीं तक चलते हैं। आज कल फैशन है तो हज़ारो आदमी चले जा रहें हैं। सिर्फ दर्शन के लिए, कहने लगे 25000 आदमी सिर्फ दर्शन के लिए आए थे। अच्छा ! फिर उनका क्या हुआ ? दर्शन हो गए। फिर क्या हुआ ? कौन सी भलाई हुई ? कुछ नहीं दर्शन हो गए साहब, दर्शन हो गए माने दर्शन हो गए। अरे भाई कुछ फायदा हुआ ? कुछ भला हुआ ? कुछ transformation हुआ, कुछ इनमें बदलाव हुआ कि यूं ही दर्शन के ही लिए गए थे वहाँ ? नहीं साहब वो तो ऐसा था कि हम तो अंदर जा नहीं सके, वो तो दूसरे जो बड़े–बड़े लोग थे वो सब अंदर गए। बाबा जी ने उनको अंगूठियाँ दी। उसके बाद वो सब अंगूठियाँ पहन कर प्रफुल्लित हो कर बाहर आ गए। उसके बाद पता चला, सबको heart attack आए। अंगूठी सहित heart attack चल रहे हैं। फिर उसके बाद पता हुआ अंगूठी भी चोरी हो गई और उनके घर में भी चोरी हो गई ! ठीक है। जिसके पास अधिक पैसा है उसको खाने के लिए बहुत सारे तैयार हो गए हैं । आपके पास गर अधिक पैसा है तो जमना जी में डाल दीजिए, नहीं तो आप के भी चिपक जाएगें। इसलिए बच के रहिए।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

अहं एवं प्रतिअहं

मानव अभी तक परिवर्तन की अवस्था में है यदि थोड़ी सी और छलांग लगा ले तो वह उस स्थिति को प्राप्त कर सकता है जिसके लिए उसका सृजन किया गया है। मानव मस्तिष्क एवं हृदय अत्यंत विकसित अवयव हैं। मानव हृदय और मस्तिष्क के सम्बन्धों को एक साथ देखना होगा।

पेट के अन्दर की चर्बी सारे केन्द्रों में से गुजरती हुई मस्तिष्क की कोशिकाओं के रूप में विकसित होकर मस्तिष्क में पहुँचती है। मानवीय चेतना में कुछ विशिष्ट परिवर्तन लाने के लिए चर्बी को विकसित होकर मस्तिष्क बनना होता है। मानव मस्तिष्क का एक ऐसा आयाम है जो पशुओं में नहीं है। मानसिक या भावनात्मक आयाम, जिसके माध्यम से हम प्रेम को समझते हैं। हम जानते हैं कि प्रेम का आदान प्रदान किस प्रकार करना है। हमें सौन्दर्य और कविता की समझ है और हम उनका सृजन करना भी जानते हैं। आकार में मस्तिष्क त्रिकोणाकार प्रिज़्म जैसा है। परमेश्वरी शक्ति की किरणें जब इसमें प्रसारित होती हैं तो ये भिन्न कोणों में चली जाती हैं और सामानान्तर चतुर्भुज शक्ति के सिद्धान्त के अनुरूप इस शक्ति का एक हिस्सा बाएं को चला जाता है और एक दाएं को। यही कारण है कि मानव भूत और भविष्य के विषय में सोच सकता है परन्तु पशु ऐसा नहीं कर सकते।

परिवर्तन के इस समय में ये अत्यन्त आवश्यक है कि सावधानी पूर्वक मस्तिष्क की रक्षा की जाए। इसे परमात्मा की रक्षा से स्वतन्त्र किया जाए ताकि स्वतन्त्र रूप से कार्य करके यह विवेक रूपी नया आयाम विकसित कर सके। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अहं और प्रतिअहं नामक संस्थाओं का सृजन किया गया है। ये दोनों संस्थाएँ मानवीय गतिविधियों की प्रतिक्रिया या प्रतिफल हैं। हर गतिविधि की प्रतिक्रिया होती है। किसी बात के लिए यदि आप 'नहीं' कहते हैं तो प्रतिक्रिया 'अहम्' है, और यदि किसी बात को आप स्वीकार कर लेते हैं तो प्रतिक्रिया प्रतिअहं है।

अहं और प्रतिअहं हमारे आज्ञा चक्र को पूर्णतः आच्छादित कर लेते हैं और कार्य करने की स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली शक्ति एवं मस्तिष्क को परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से पृथक कर देते हैं। उत्क्रान्ति प्राप्त करने के लिए ये आवश्यक है कि मानव प्रयत्न करता रहे। परमात्मा ने जो भी कुछ किया है वह आपकी भलाई के लिए किया है। परमात्मा ने आपके अन्दर अहं और प्रतिअहं की रचना इसलिए नहीं की कि आप बिगड़ जाएँ या नष्ट हो जाएँ। आपके अन्दर अहं का होना आवश्यक है परन्तु आपने इससे लड़ना नहीं है। अपने अहं को आपने परमात्मा के अहं से एकरूप कर देना है। एक बार जब आपकी जागृति हो जाएगी, आपमें प्रकाश आ जाएगा तो ऐसा कर पाना सम्भव होगा।

परम पूज्य श्रीमाताजी
(निर्मल योगा से उद्धृत
एवं अनुवादित।)

परम पूज्य श्रीमाताजी की सहजयोगियों को सीख

(सहजयोग सभी शारीरिक एवं अन्य तकलीफों को दूर करता है)

चक्रों के विषय में हमेशा सावधान रहना अत्यन्त आवश्यक है। बाहर की बाधाओं और पकड़ से इन्हें बचाकर रखा जाना चाहिए। नियमित पानी पैर क्रिया चक्रों को स्वच्छ रखने में बहुत सहायक होगी। देखा गया है कि शारीरिक तथा अन्य रोगों का कारण बनने वाली बाधाओं का प्रवेश आँखों और भोजन के माध्यम से होता है। इसकी ओर विशेष रूप से सावधान रहना सदैव अपेक्षित है। चक्र जब खुले होते हैं तभी देवी–देवता जागृत होते हैं और सहजयोगियों की सहायता करते हैं। सोने से पूर्व बन्धन लेना भी बाधाओं से रक्षा करता है।

भक्त हमेशा अपने इष्ट–देव को प्रसन्न रखना चाहता है परन्तु हमारी माँ (श्रीमाताजी) इतनी दयालु हैं, इतनी करुणामय हैं कि वो अपने बच्चों को प्रसन्न देखकर और सहजयोग में उन्नत होते हुए देखकर प्रसन्न होती हैं। सहजयोगी बच्चों से मिलने के लिए और उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए वे भिन्न स्थानों और देशों में जाती हैं। बच्चों को भी उतना ही संवेदनशील होना चाहिए और जब–जब भी वे उनसे मिलती हैं तो उन्हें अपनी समस्याएं बताने की अपेक्षा सहजयोग में अपनी उन्नति दर्शानी चाहिए। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि उनके दिखाए गए मार्ग पर चलने से सहजयोगी विश्व के सबसे अधिक सौभाग्य शाली लोग होंगे।

माँ के प्रति प्रेम का अहसास स्वाभाविक है। मौन इसकी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है क्योंकि वे हृदय की सूक्ष्मतम अनुभूतियों को समझती हैं। बिना इजाज़त उनके चरण कमलों को छूने के लिए आगे भागना, उनके चित्त को आकर्षित करने का प्रयास करना, बिना कहे बोलना तथा उनके निवास पर उनसे मिलना, अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करने का आवांछित तरीका है। हमारी परमेश्वरी माँ पावनता की प्रतिमूर्ति हैं। उनके चरण कमलों पर नतमस्तक होना हम लोगों के लिए सुखकर हो सकता है परन्तु यह उनके (श्रीमाताजी) के लिए कष्टकर है क्योंकि हम लोग बाधाओं से परिपूर्ण हैं। भारत में अपने बुजुर्गों की चरण–सेवा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की परम्परा है। यही सेवा लोग श्रीमाताजी की भी करना चाहते हैं परन्तु श्रीमाताजी सामान्य मानव से भिन्न हैं, उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है। किसी व्यक्ति को चरण सेवा करने के लिए यदि माँ कहती हैं तो केवल उस व्यक्ति के चक्रों को शुद्ध करने के लिए ऐसा करती हैं अपने आराम के लिए नहीं। अतः सभी लोगों को इस बात का ध्यान रखना है कि उनकी आज्ञा के बिना उनके शरीर के किसी भी भाग को स्पर्श नहीं करना चाहिए। सहजयोगी यदि सर्व–साधारण जनता के बीच हों तो उन्हें चाहिए कि अपने चक्रों को शुद्ध करने के लिए न तो प्रतीकात्मक रूप से हाथ हिलाएं, न कुण्डलिनी उठाएं, न बन्धन लें, न बाएं–दाएं के असन्तुलन को दूर करने के लिए बाएं–दाएं को उठाएं या गिराएं।

ये सारा कार्य चित्त से भी अत्यन्त प्रभावशाली रूप से किया जा सकता है। जन कार्यक्रमों में प्रवचन सभागार के द्वार पर श्रीमाताजी का स्वागत करने के लिए भीड़ लगानेका कोई लाभ नहीं। बेहतर होगा कि उनके आगमन से पूर्व सभी लोग अपने स्थान पर बैठे रहें और उनके आने पर सम्मान–पूर्वक अपने स्थान पर खड़े होकर हाथ जोड़कर उनका स्वागत करें। माला अर्पण करने से पूर्व उनका आदेश लिया जाना आवश्यक है। प्रायः पहुँचते ही जब वे लोगों से उनका कुशल क्षेम पूछ रहीं होती हैं तब वे माला पहनाने की आज्ञा देती हैं। ऐसे समय पर किसी समस्या के बारे में यदि उन्हें बताना हो तो बहुत संक्षेप में बताना चाहिए। समस्या का समाधान यदि वे उस समय न बताएं तो इस पर बल नहीं दिया जाना चाहिए। उनका मौन इस बात की ओर इशारा करता है कि समाधान शीघ्र ही आ जाएगा। उनकी विनम्रता, सहज में उन तक पहुँच जाना और सभी के प्रति उनका सम्मानमय व्यवहार, के गलत अर्थ लगा लिए जाते हैं। उनकी उपस्थिति में सभी मर्यादाओं का पालन करना, विनम्र, सम्मानमय, सतर्क और प्रतिसंवेदी होना आवश्यक है। सभी देवी–देवता उनकी हाजिरी में होते हैं और उनके प्रति ज़रा सी भी मर्यादा विहीनता बर्दाश्त नहीं करते। उनकी उपस्थिति में उनके प्रति विनम्रता और प्रेम के कारण हो सकता है कि वे स्वयं को नियंत्रित करें परन्तु एक सीमा से आगे वो क्रियाशील हो उठते हैं और दण्ड से बचा नहीं जा सकता। श्रीमाताजी के सभागार में प्रवेश करते ही सारी निजी बातचीत समाप्त हो जानी चाहिए और उनकी उपस्थिति में ऐसी कोई बात नहीं की जानी चाहिए। उनके प्रवचन में किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं होना चाहिए। उन्हें किसी व्याख्या, मश्वरा या टिप्पणी की आवश्यकता नहीं।

समर्पण के बिना श्रद्धा सम्भव नहीं है। अहं और प्रतिअहं समर्पण के मार्ग में बाधाएं हैं। एक पाश्चात्य सहजयोगी के अनुसार " मैं अपने अहं को देखता हूँ और मुस्कराता हूँ, मुझे स्वयं से दूर रखने के लिए तुम कौन सी चालाकियाँ नहीं करोगे ?" आत्म साक्षात्कार की ओर बढ़ने के लिए परम पूज्य श्रीमाताजी के चरणों में अहं और प्रतिअहं को समर्पित करना अत्यन्त आवश्यक है। समर्पण का अर्थ है स्वीकार करना कि माँ उच्चतम हैं और ब्रह्माण्ड की उत्पत्तिकर्त्ता हैं तथा वे जानती हैं कि हमारे लिए क्या सर्वोत्तम है, उनका बोला हुआ हर शब्द साक्षात् प्रणव है। **समर्पण का अर्थ है सभी पूर्व अनुभवों को भुला देना सभी गुरुओं को और पुस्तकों से प्राप्त किए गए ज्ञान को भुला कर श्रीमाताजी द्वारा बताए गए मार्ग को निष्ठा–पूर्वक अपनाना।** समर्पण का अर्थ है सभी समस्याओं को अहं के माध्यम से समाधान खोजने के स्थान पर उन्हें परम पूज्य श्रीमाताजी पर छोड़ देना। समर्पण का सुगमतम मार्ग जीवन में श्रीमाताजी के गुणों और उनकी जीवन शैली का अनुसरण करना है। **प्रलोभन, उत्तेजना, तनाव या निराशा के क्षणों में व्यक्ति सदा स्वयं से पूछ सकता**

है " क्या ऐसे अवसर पर श्रीमाताजी भी ऐसा ही आचरण करतीं जैसा मैं कर रहा हूँ ?"

उन्हें याद रखना और ये सोचना कि ऐसे हालातों में श्रीमाताजी क्या करतीं, व्यक्ति के लिए पथ प्रदर्शक एवं सहायक शक्ति होनी चाहिए जिसके माध्यम से वह नकारात्मक शक्तियों को दूर रख सके।

पुनर्जन्म प्राप्त व्यक्तियों का जीवन नकारात्मकता से निरन्तर संघर्षरत है क्योंकि उनके अपने अहं और प्रतिअहं भी उनके विरोध में खड़े होते हैं। नकारात्मकता अन्तर्जात हो सकती है। पूर्वजन्मों में, न केवल इस जन्म में, किए गए कर्मों के फलस्वरूप यह हमारे अन्दर सूक्ष्मतम रूप में बनी रहती है। रोज़मर्रा के जीवन में भी यह हमारे अन्दर प्रवेश करती रहती है। **नकारात्मकता को यदि काबू न किया जाए तो अवसर मिलते ही आन्तरिक नकारात्मकता बाह्य नकारात्मकता से एकरूप होकर श्रीमाताजी के शुभ प्रभाव को निष्प्रभावित कर देती है। अतः यह आवश्यक है कि आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् कोई भी सहजयोगी किसी कुगुरु के पास न जाए न ही उनका साहित्य पढ़े।** नकारात्मक बहस से तथा नकारात्मक लोगों से मिलने जुलने से दूर रहना बेहतर होगा। किसी मन्दिर में प्रवेश करने से पहले उसका चैतन्य जाँचा जाना चाहिए।

हमारे हृदय में परमेश्वरी माँ का स्थान होना चाहिए। हमेशा उन्हें स्मरण रखते हुए निर्विचार समाधि की स्थिति को बनाए रखना हमारे दृष्टिकोण को निर्लिप्तता पूर्ण बना देगा और हमें सांसारिक और भौतिक पचड़ों से दूर रखेगा। प्रतिदिन अपने नाम की जूता क्रिया करने से भी अन्तर्निहित सूक्ष्म नकारात्मकता दूर की जा सकती है। नकारात्मक लोगों को बन्धन देना और उनके नाम को जूते मारना उन्हें आपसे दूर तो रखेगा ही, उन्हें सुधार भी सकता है। दूसरे लोगों की गलतियों और मूर्खताओं की आलोचना एवं उनकी शिकायत करने के स्थान पर उनकी गलतियों की अनदेखी करना आपके अन्दर उदारता को बढ़ावा देगा। निरन्तर अभ्यास से अपने अन्दर इन गुणों को स्थापित करना अत्यन्त सहायक हो सकता है।

जो कुछ भी कहा जा चुका है उसके बावजूद श्रीमाताजी ने सहजयोग का बीजारोपण कर दिया है और आवश्यक वातावरण मिलने पर यह बीज अंकुरित होकर बहुत विशाल वृक्ष का रूप धारण करेगा। अपनी सर्वव्यापी शक्तियों से श्रीमाताजी हमारी रक्षा करती हैं। परन्तु हमें आवश्यक वातावरण तो बनाना ही होगा। चुनने की स्वतन्त्रता का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा तथा उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर बने रहना होगा। सर्वशक्तिमान परमात्मा साधकों का स्वागत करने की प्रतीक्षा कर रहें हैं। जो लोग उन तक नहीं पहुँच सकते उन्हें स्वयं को ही दोष देना होगा।

(निर्मल योग से उद्धृत एवं अनुवादित)

श्रद्धा

परम पूज्य श्रीमाताजी से आत्म–साक्षात्कार लेकर सभी सहजयोगी द्विज़ बन जाते हैं। केवल परमेश्वरी माँ ही उन्हें मोक्ष प्रदान कर सकती हैं क्योंकि वे परम पिता श्री सदा शिव की शक्ति हैं (शिव शक्ति रूपिणी)। उनके चरण कमलों पर जब सहजयोगी निर्विचार समाधि की आनन्ददायी अवस्था में पहुँचते हैं तो उन्हें उत्क्रान्ति प्रक्रिया की अन्तिम–अवस्था की एक झलक प्राप्त होती है। अतः सभी सहजयोगी अपना अन्तिम लक्ष्य जानते हैं और अपनी अपनी शारीरिक एवं मानसिक स्थितियों के अनुरूप उन्हें एक लम्बा मार्ग तय करना होता है। आत्म–साक्षात्कार का अलभ्य अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति में ये धारणा दृढ़ हो जानी चाहिए कि श्री माताजी के प्रति श्रद्धा और उनके आदेशानुसार ध्यान धारणा करना मोक्ष प्राप्ति का एक मात्र मार्ग है।

श्रीमाताजी की शक्तियाँ सर्वव्यापी हैं और सहजयोगियों तथा श्रीमाताजी के बीच आध्यात्मिक सम्पर्क में कोई भी दूरी बाधा नहीं डाल सकती। सामूहिक चेतना श्रीमाताजी का सहजयोगियों को दिया गया अमूल्य उपहार है। उनकी उपस्थिति को चैतन्य चेतना (Vibratory Awareness) के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। अपनी सर्वव्याप्त शक्ति के माध्यम से वे अपने सभी बेटे–बेटियों की गतिविधियों के बारे में जानती हैं। उनके कुशल क्षेम का ध्यान रखती हैं, उनके अन्दर व्याप्त सभी बाधाओं को रोकती हैं और उनका समाधान करती हैं तथा उनकी कुण्डलिनी को उठाती रहती हैं। बच्चे यदि पुकारें तो वे तुरन्त उस पुकार का उत्तर देती हैं। वे 'योग क्षेम वाहम्यम' रूपी अपने वचन को पूरा कर रहीं हैं।

ये सोचना बिल्कुल गलत होगा कि श्रीमाताजी और देवी–देवता भिन्न अस्तित्व हैं। सभी देवी–देवता उनके अन्दर पूर्णतः अभिव्यक्त होते हैं और उनसे भिन्न कहलाना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। इस प्रकार का कोई भी विचार सम्बन्धित चक्र को हानि पहुँचा सकता है। श्रीमाताजी के प्रति श्रद्धा देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा है।

श्रद्धा के बहुत से पक्ष हैं, कुछ स्थूल हैं और कुछ सूक्ष्म। एक पक्ष को दूसरे से बेहतर समझना उचित न होगा क्योंकि आध्यात्मिक उत्क्रान्ति के लिए सभी पक्ष आवश्यक हैं। ब्रह्म मुहूर्त में ध्यान–धारणा करना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। बिस्तर छोड़ने से पूर्व व्यक्ति को अत्यन्त सम्मान–पूर्वक पृथ्वी माँ को प्रणाम करना चाहिए। बिस्तर पर बैठकर ध्यान करना भी कुछ लोगों के लिए हितकर हो सकता है। परन्तु स्नान आदि करने के पश्चात् हमें श्रीमाताजी के सम्मुख बैठकर ध्यान करना चाहिए। ध्यान आरम्भ करने से पूर्व स्वयं को तथा बैठने के स्थान को बन्धन देना हितकर होता है। श्रीमाताजी के सामने नतमस्तक होकर प्रणाम करें। जाने–अनजाने में की गई गलतियों के लिए क्षमा याचना करें और उनका योग्य बालक बनने के लिए आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनसे प्रार्थना करें। स्नान आदि करने के पश्चात् ही अच्छी गुणवत्ता की सामग्री तथा

साफ तौलिया आदि लेकर श्रीमाताजी की पूजा की जानी चहिए। पूजा के पश्चात् भी ध्यान में बैठना हितकर है। शाम के समय आरती करें और ध्यान करें। सहजयोग में उत्क्रान्ति के लिए सप्ताह में एक बार सामूहिकता में ध्यान करना आवश्यक है। आन्तरिक और बाह्य सफाई महत्वपूर्णतम है। परन्तु इस मामले में अति में जाना आवांछित है क्योंकि इससे व्यक्ति का चित्त लक्ष्य से भटक जाता है। शाम को सोने से पूर्व श्रीमाताजी की फोटोग्राफ के सम्मुख पानी पैर क्रिया करना नियमित रूप से होना चाहिए। यह क्रिया आवश्यक है।

(निर्मल योग से उद्धृत एवं अनुवादित)

ज्यूरिक (Zurich) से एक पत्र

यूरोप की ठण्ड, बर्फ और हवाओं में हम लौट आए हैं। परन्तु आपके सदैव चमकते हुए सूर्य, अविस्मरणीय सूर्यास्त, आपके देश की चमक एवं प्रकाश को भूल पाना हमारे लिए असम्भव है। इन्द्र धनुषी अछूते गाँव, वातावरण की ताज़गी तथा हमारे संसर्ग में आए लोगों की दिनचर्या ने हमें आन्तरिक शान्ति एवं गहन–ध्यान की ओर आमन्त्रित किया। जिन सहजयोगियों से हम मिले उन्होंने भी हमें आपके पावन देश के वासियों के अन्तर्निहित आनन्द को खोजने के लिए प्रेरित किया।

हम जानते हैं कि हम पश्चिमी लोगों को हर बात पर धन्यवाद देने की बुरी आदत है। अतः हमें अपने हृदय का उपयोग करना चाहिए, मस्तिष्क का नहीं। इस पत्र के माध्यम से सभी पश्चिमी सहजयोगियों की ओर से हम कहना चाहेंगे कि जिस प्रकार आपने हमारा अपने देश में स्वागत किया, इतना प्रेम, आनन्द एवं भाईचारा प्रदान किया उसके लिए हम सब आपके आभारी हैं।

आप सभी हमारे प्रति इतने मधुर थे कि आपकी मुस्कराहट , दृष्टिकोण एवं उदारता के माध्यम से हम अपनी प्रिय श्रीमाताजी की कार्यशैली को देख पाए। आपके प्रति कृतज्ञता एवं सम्मान से हमारे हृदय परिपूर्ण हैं। श्रीमाताजी के प्रति आप लोगों की श्रद्धा, प्रेम एवं समर्पण अनुसरणीय उदाहरण हैं। आपके व्यवहार में हमने आपकी श्रद्धा के प्रतिबिम्ब को महसूस किया। आप लोग कितने विवेकशील हैं, कितने विश्वस्त हैं और किस प्रकार वर्तमान की महत्ता पर स्वामित्व पाने लगते हैं !

यहाँ, पश्चिम में हम भविष्य को देखते हैं, पहले से देखते हैं, उसकी योजना बनाते हैं और इस क्रिया में हमारे गतिमापक (Speedometer) पगला जाते हैं। वर्तमान के सौन्दर्य को महसूस करने का समय हमारे पास नहीं है। परन्तु हमारी परम पूज्य श्रीमाताजी की सृजित सृष्टि का आनन्द तो केवल वर्तमान के माध्यम से ही लिया जा सकता है।

हम आपसे पहली बार मिले परन्तु हमें ऐसा लगा मानो आप युगों–युगों से हमारे हृदय में रहते हों और प्रथम मिलन में ही हमने अपने भाई–बहनों को पहचान लिया जो आनन्दावस्था में अपना सभी कुछ हमसे बाँटने को तैयार थे। हमने तो केवल लेना ही था,अतः हमने स्वयं को प्रेम की इस गतिशीलता के सम्मुख समर्पित कर दिया। हमारा महानतम अनुभव ये है कि जीवन में पहली बार हमने अपनी प्रिय श्रीमाताजी और हमारे मध्य के माध्यम को देखा। अपनी चेतना के माध्यम से आप सुगमता–पूर्वक श्रीआदिशक्ति के परमेश्वरी सौन्दर्य को बहुत कुछ समझते हैं, बहुत कुछ खोजते हैं क्योंकि आपकी संवेदना हमसे कहीं अधिक है और गतिशील आत्मा के माध्यम से आप आत्म–सात करते हैं, थके हुए मस्तिष्क के माध्यम से नहीं। आपके अहं के गुब्बारों की हवा निकल चुकी है, आपकी विनम्रता कहीं अधिक है। आपके आचरण की कृपा से हम श्रीमाताजी को ऊँचा , और अधिक

ऊँचा, अधिक दिव्य, अधिक शक्तिशाली रूप में देखते हैं क्योंकि जिस प्रकार पूर्ण चित्त , गहन सम्मान, श्रद्धा एवं प्रशंसा भाव से आप उनसे व्यवहार करते हैं वह हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। आप उनसे तभी बोलते हैं जब वे आपसे कुछ पूछें, आप अचानक बोलना शुरु नहीं कर देते और न ही उन्हें बीच में टोकते हैं। मर्यादाओं का आप सम्मान करते हैं। परमात्मा करे की आत्मा द्वारा समझने एवं दर्शन करने के योग्य अपनी परमेश्वरी माँ की गरिमा को बढ़ाने के लिए हम सब भी आपकी सहजता और उत्साह का अनुसरण करें।

यह वह महान समय था जब पूर्व और पश्चिम माँ के प्रेम सागर में विलय हो गए थे, इसी समय हमने परमात्मा द्वारा ज्योतित सौन्दर्य का अवलोकन किया और ये जाना कि किस प्रकार एक दूसरे का सम्मान करना है और परस्पर प्रेम दर्शाना है। श्रीमाताजी द्वारा दिए गए एक साथ रहने और प्रेम आदान–प्रदान करने के लक्ष्य को हमें प्राप्त करना है। परस्पर प्रेम एवं आनन्द के आदान–प्रदान के माध्यम से ही सामूहिकता की भावना की अधिकाधिक अभिव्यक्ति होती है और हमें अहसास होता है कि श्रीमाताजी की दिव्य चेतना हमारे अन्दर की गहराइयों में बसती चली जा रही है।

ब्रहमाण्ड के सृष्टा से हम ये प्रार्थना करते हैं और मिलकर सभी वचन देते हैं कि हम केवल अपने अन्दर चमकते हुए सौन्दर्य को ही देखेंगे और ये याद रखते हुए कि हमारी माँ हमसे कितना प्रेम करती है, हम भी परस्पर उतनी ही गहनता से प्रेम करेंगे और परस्पर एक ही परमात्मा के बच्चे होने का अहसास बनाए रखेंगे।

आइए स्वयं को श्रीमाताजी की सुरक्षा में समर्पित कर दें ,उनके साक्षात में बार–बार मिलें और मिलकर उनकी गरिमा को बढ़ाएं, क्योंकि केवल उन्हीं की कृपा से हम अपने सौन्दर्य तथा आनन्दमयी आत्मा की ज्योति को प्राप्त कर सकेंगे।

हार्दिक प्रेम एवं
जय श्रीमाताजी
Arneau, Maria-Amelia, Marie
Laure, Gregoire, Catherine
Christine
(निर्मल योग से उदधृत एवं अनुवादित)

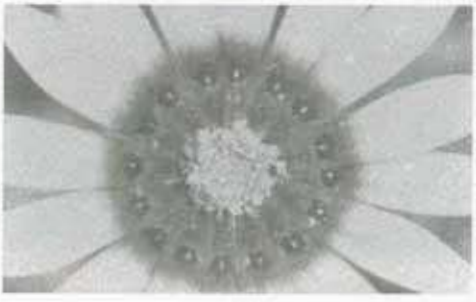

परम पूज्य श्रीमाताजी का एक पत्र

लन्दन 2.6.1980

बानेश्वर में जिस कार्यक्रम का आपने आयोजन किया है निश्चित रूप से वह अत्यन्त सफल होगा। अब परमात्मा के सारे कार्यों में एक नई गतिशीलता आएगी। पूना के सहजयोगियों ने पूना के पुण्यों को सम्पूर्णता प्रदान की है इसमें मेरा कोई विशेष योगदान नहीं है। आपको जो भी प्राप्त हुआ है उसे आपने खोजा है और स्वीकार किया है। यह आनन्द का स्रोत है।

सहजयोग, महायोग के रूप में विकसित हो रहा है । बानेश्वर की गोष्ठी (Seminar) में ये बात साबित हो जाएगी। यूरोप में भी अब बहुत विशाल स्तर पर कार्य शुरु हो गया है। इस वर्ष आपकी पावन भूमि पर बहुत से लोग आने वाले हैं। मैं नवबर में आऊँगी। तब तक गाँव–गाँव में सहजयोग का सन्देश पहुँच जाना चाहिए।

सभी को मेरा स्नेहमय आशीर्वाद

सर्वदा आपकी
अपनी माँ निर्मला
(मराठी से अनुवादित)
(निर्मला योगा–1981)

श्रीमन सी0 पी0 श्रीवास्तव का स्वागत

दिल्ली– 4 जनवरी 1980

4 जनवरी 1980 की शाम दिल्ली के सहजयोगियों के लिए अत्यन्त स्मरणीय एवं आनन्ददायी थी। उन्होंने श्रीमन सी0पी0 श्रीवास्तव का ह्रदय से स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमन सी0पी0 श्रीवास्तव ने सहजयोगियों को इस प्रकार सम्बोधित किया:–

श्री सुब्रमण्यम् और दिल्ली के प्यारे सहजयोगियो और सहजयोगिनियों,

सर्वप्रथम तो मैं ये कहूँगा कि आज शाम जितने प्रेम सम्मान एवं करुणा की वर्षा आपने मुझपर की, उसके लिए मैं आपका ह्रदय से अनुगृहीत हूँ। ये अनुभव मेरे लिए अत्यन्त सुखकर है,और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं इसे बड़े लम्बे समय तक संजोकर रखूंगा।

सहजयोग अब मेरी पत्नी, जिन्हें आप माताजी कहते हैं, की जान है। वे अब भी मेरी पत्नी हैं और जैसे सुब्रमण्यम् जी ने कहा, उन्होंने एक पूर्ण पत्नी की भूमिका निभाई और मैं ये कहना चाहूँगा कि इसके साथ–साथ उन्होंने एक पूर्ण माँ और अब नानी माँ की भूमिका भी निभाई। अब वे मानव के लिए जो भी कुछ कर रही हैं उस पर मुझे गर्व है और सन्तोष है। मैं ये कहना चाहूँगा कि वर्षों पूर्व जब हमारी दोनो बेटियाँ छोटी थीं तो हम दोनों ने निर्णय किया कि हम उनका ठीक प्रकार से पालन पोषण करेंगे, उन्हें पढ़ाएंगे, लिखाएंगे और ये दखेंगे कि विवाह के पश्चात् उन्हें सुख शांति से परिपूर्ण जीवन प्राप्त हो। केवल तभी वे अपने विशाल मानव परिवार के प्रति स्वयं को समर्पित करने के लिए स्वतन्त्र होंगी। उन्होंने (श्रीमाताजी) अपना वचन निभाया और मैंने अपना। हमारी बेटियाँ बड़ी हुई। इसका श्रेय, स्वाभाविक रूप से उन्हें ही जाता है क्योंकि मैं तो अपने दफ़्तर के कार्यों में ही बहुत अधिक व्यस्त था।

बच्चों और घर की देखभाल की जिम्मेदारियों को स्वीकार करके उन्होंने मुझे भी सशक्त आश्रय प्रदान किया। मैं तो केवल अपने दफ़्तर के कार्यों तक ही सीमित रहा। बेटियाँ जब बड़ी हुईं तो उनके विवाह का प्रश्न आया और ये समय मेरी पत्नी के पालन–पोषण तथा बेटियों की भी परीक्षा का था। मैंने अपनी बेटियों से पूछा, " अब आप बड़ी हो गई हो, तुमने इतनी दुनिया घूम ली है, तुम अच्छी पढ़ी लिखी हो, विश्व के बहुत से देश देख चुकी हो, अब तुमने निर्णय करना है कि किस प्रकार से तुम विवाह करना चाहोगी।" परन्तु ,जिस प्रकार से सच्ची भारतीय परम्परा के अनुसार मेरी पत्नी ने उनका पालन पोषण किया था, दोनों ने कहा कि माता–पिता के रूप में उनके लिए दुल्हे खोजने का कर्तव्य हमारा है। अतः जो कुछ भी हमने निर्णय लिया वही उनका निर्णय था। बम्बई, जहाँ हम रहते थे, वहाँ के लोग इस बात पर विश्वास न कर पाए कि इतनी पढ़ी लिखी और इतना भ्रमण करने के पश्चात् भी पुरातन भारतीय मूल्यों के अनुरूप भारतीय पारम्परिक शैली से वे

विवाह करना चाहेंगी! तो माता–पिता के रूप में हमने उनके लिए दुल्हे खोजे और अब वे दोनों अपने परिवारों में सुख शान्ति पूर्वक स्थापित हैं।

तब से मेरी पत्नी अपना समय, केवल समय ही नहीं अपनी आत्मा भी, सहजयोग को समर्पित कर रही हैं और मैंने देखा है कि उनके प्रयत्न का कितना चमत्कारिक परिणाम है ! जिस विश्व में हम रह रहे हैं, सुबह उठकर यदि आप समाचार पत्र पर दृष्टि ड़ालें तो कठिनाइयाँ, कष्ट, दुर्घटनाए भरी हुई होती हैं। वे शान्ति लाना चाहती हैं आध्यात्मिक शान्ति । जहाँ भी वैर–भाव है उसके स्थान पर वह प्रेम लाना चाहती हैं, कड़वाहट के स्थान पर सामंजस्य स्थापित करके वे लोगों में आध्यात्मिक उत्क्रांति लाना चाहती हैं। मेरे विचार से आज विश्व अशान्त है। मुझे लगता है कि वास्तव में मानव अपने अन्दर और बाहर से अशान्त है। तो समय की आवश्यकता क्या है ? वैभवशाली देशों की स्थिति भी बेहतर नहीं है। हो सकता है उनके पास भौतिक पदार्थ अधिक हों परन्तु आन्तरिक रूप से वे हमसे भी अधिक परेशान हैं। हम भारतीय लोग कुछ सीमा तक तो सन्तुष्ट हैं। हमारी संस्कृति अत्यन्त समृद्ध है और हमारी परम्पराएं अत्यन्त आश्चर्यजनक । हमारी शानदार परम्पराओं में भौतिकता और आध्यात्मिकता का पतन हुआ है इसलिए वहाँ आन्तरिक अशान्ति बहुत अधिक है। सर्वत्र लोग कुछ खोज रहे हैं। वे जानना चाहते हैं कि दिखाई देने वाले इस विश्व से परे क्या है ? और मानव की नियति क्या है ? यदि मानवता की रक्षा करनी है तो एक नई क्रान्ति, आध्यात्मिक क्रान्ति, का आना अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा युद्ध, लड़ाईयाँ और संघर्ष मानवता को नष्ट करे देंगे। इस संदर्भ में मैं सहजयोग में मानव–मात्र के लिए एक नए आन्दोलन की शुरुआत देखता हूँ और आप लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि सहजयोगी और सहजयोगिनियों के रूप में आप जो कार्य कर रहे हैं मुझे उस पर गर्व है– सबके लिए सच्चा निःस्वार्थ प्रेम, सहज आदर्शों के लिए सच्चा समर्पण , ये आश्चर्यजनक मूल्य हैं।

इंग्लैण्ड में मैंने सहजयोग के चमत्कार देखे हैं, और जो मैंने देखा है वह मैं आपको बताना चाहूँगा। जिम्मेदारियों के कारण मेरा जीवन अत्यन्त व्यस्त है। एक माह पूर्व एक बार जब मेरी पत्नी और सहजयोगियों ने मुझे एक समारोह के लिए निमंत्रित किया , मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ, वहाँ बूढ़े, जवान, अधेड़ और बच्चे, वे सब एक सुख–शान्त परिवार की तरह से दिखाई दिए। वे देश के भिन्न भागों से आए थे। अत्यन्त प्रसन्न और शान्त मुद्रा में वे सब एक साथ थे और उनके चेहरों पर गहन दिव्यता झलक रही थी। वे प्रसन्न थे, शान्त थे और प्रायः दिखाई देने वाली भीड़ से अलग थे। जीवन के तनावों, क्रोध एवं कड़वाहटों का उन पर कोई असर न था। एक चीज़ जिसने मेरे हृदय को स्पर्श किया कि बहुत सी महिलाएँ एक–एक करके आईं, उनमें से कुछ की आँखों में आँसू थे। वे मेरी पत्नी के पास आई, जहाँ में भी बैठा हुआ था। एक महिला कहने लगी, श्रीमाताजी आपने मुझे और मेरे बेटे को बचा

लिया है। मेरा बेटा भटक गया था उसे नशे और शराब की लत पड़ गई थी। अब वह बच गया है। वह परिवार में वापिस आ गया है। अब हमारा आनन्दमय परिवार है। इस कृपा के लिए किस प्रकार हम आपका धन्यवाद करें ? एक अन्य महिला आकर कहती हैं, " मेरी बेटी हमारी इच्छाओं के विपरीत गलत रास्ते पर चल रही थी। आपका सहजयोग उसे वापिस परिवार में ले आया है और अब हम एक बार फिर संयुक्त और प्रसन्न परिवार हैं।" मेरे विचार से इस प्रकार यदि एक भी व्यक्ति को बचाया जा सके तो यह अद्वितीय उपलब्धि है। दो व्यक्तियों को यदि बचाया जा सकं तो बेहतर है परन्तु यदि दर्जनों और सैकड़ों को बचाया जा सके तो यह चमत्कार है। मुझे लगता है कि मानवता के हित के लिए इस आन्दोलन में बहुत सी महान सम्भावनाएं हैं बशर्ते कि अपने मूल्यों के अनुरूप कठोरतापूर्वक चलते हुए आप इस पथ पर आगे बढ़ें। मूल्य अत्यन्त आवश्यक हैं, विशेष रूप से आज के विश्व में। यद्यपि पूरे विश्व में उन मूल्यों का पतन हुआ है जो मानव समाज को स्थिर करते थे, फिर भी इन मूल्यों को पुनर्जीवित करना होगा और बनाए रखना होगा। विनम्रता एवं निष्ठा पूर्वक मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे देश भारत वर्ष की मान्यताएं पूरे विश्व की मान्यताओं से कहीं बेहतर हैं। कोई भी देश भारत से अच्छा नहीं है , कोई भी लोग भारतीय लोगों से अच्छे नहीं हैं। इतना कुछ याद रखके यदि हम भारतीय बनें तो बहुत अच्छा है। भारत में जन्म लेना ही काफी नहीं है। हमें यहाँ की मान्यताओं का सम्मान करना है। उन मान्यताओं का सम्मान करना होगा जो भारत को महान बनाती हैं और भारतीयों को विवेकशील। हमारी परम्पराएं अत्यन्त समृद्ध हैं और अत्यन्त अद्भुत। परन्तु हम कभी–कभी अपनी वास्तविकता को छोड़ बैठते हैं। अब भी यदि हम सब अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए विवेकपथ पर चलकर सच्चे भारतीय बनें और उस महिला, मेरी पत्नी, द्वारा बताई गई विधि द्वारा अपना अध्यात्मिक विकास करें तो, मुझे कोई सन्देह नहीं है, हम एक अद्भुत आध्यात्मिक उत्क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

जो प्रेम आप मेरी पत्नी को दे रहे हैं उसके लिए इन थोड़े से शब्दों के साथ मैं आप सबके प्रति अपनी गहन कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ। आप लोग उनके स्वप्नों का साकार रूप हैं। एक विशेष प्रकार की सामूहिकता का सृजन करना, आध्यात्मिक सामूहिकता, अन्तिम सत्य की एक विशेष चेतना का सृजन करना उनका ख्वाब था। अतः यहाँ पर आप लोगों की उपस्थिति मेरे लिए उनके सदा से संजोए हुए स्वप्न की साकार प्रतिमूर्ति है। जो प्रेम एवं स्नेह आपके मन में उनके लिए है उसके लिए मैं आपका अभारी हूँ। आज मेरे प्रति जो करुणा और प्रेम आपने दर्शाया है उसके लिए मैं आपको धन्यवाद करता हूँ। मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि किसी भी प्रकार से मेरी गतिविधियाँ उनके कार्य में सहायक हो सकती है तो ये उनके लिए हैं। उनका पूरा समय सहजयोग के लिए है और इसकी मुझे बहुत खुशी है। काश कि उनके लिए दिन में चौबीस

घण्टो के स्थानपर 48 घण्टे होते !

जो भी क्षेम उनके पास है उसे वे भली–भांति समर्पित करती हैं। अपनी पत्नी की बात करना अत्यन्त उलझन पूर्ण है परन्तु ये सम्बन्ध भी जीवन की वास्तविकता है। इससे ऊँचा भी एक सम्बन्ध है जो आप लोगों का श्रीमाताजी के साथ है।

उनमें ऐसे बहुत से गुण हैं जो सम्भवतः आप न देख पाएं। उन्हें केवल देने में विश्वास है लेने में नहीं। आप जानते हैं कि हमारे सभी प्रकार के सम्बन्धी होते हैं। कुछ बहुत समृद्ध हैं, कुछ इतने समृद्ध नहीं हैं, कुछ निर्धन हैं, कुछ जरूरतमन्द हैं, परन्तु हमारे सरकारी सेवाकाल में जो भी सम्बन्धी हमारे यहाँ आया, हमारे यहाँ जो कुछ भी उपलब्ध था उसे हमारे बच्चों और हमारे यहाँ आए बच्चों ने बराबर बाँटकर लिया। कभी भी उन्होंने अपनी बेटियों तथा हमारे घर आए किसी और के बेटे–बेटियों में फर्क नहीं किया। ये बात आरम्भ से ही थी। उनका स्वभाव सदा ऐसा ही था, यही कारण है कि वे आध्यात्मिक व्यक्तित्व में पुष्पित हो रही हैं। आज भी यही घटित हुआ है। कुछ समय से ऐसा ही था। अब तो ये गुण और अधिक बढ़ रहा है। आन्दोलन विस्तृत हो रहा है। ये आन्दोलन स्वैच्छिक है। इंग्लैण्ड, फ्रॉस,जर्मनी, अन्य यूरोपियन देश, आस्ट्रेलिया और निस्सन्देह भारत, इसकी मातृ–भूमि है। परमात्मा करे कि ये आन्दोलन आगे बढ़े, सहज–गतिविधियों में अधिक से अधिक संख्या में सहजयोगी सम्मिलित हों और उन सभी महान भारतीय मूल्यों को पूनर्जीवन दें जिन पर हमें नाज़ है। जो सम्मान आज आपने मुझे दिया है और देवी–लक्ष्मी की प्रतिमा का सुन्दर तोहफ़ा जो आपने मुझे दिया है उसके लिए आप सबका हृदय से धन्यवाद करते हुए अपना भाषण समापन करूँगा। देवी लक्ष्मी की कृपा–वर्षा आप सब पर होती रहे।

तत्पश्चात् परम पूज्य श्रीमाताजी ने सामूहिकता को इस प्रकार सम्बोधित किया:–

श्री श्रीवास्तव के विषय में बात करना एक प्रकार से, अत्यन्त उलझन–पूर्ण कार्य है। मुझे प्रसन्नता है कि आज आप लोग उनका सम्मान कर रहे हैं क्योंकि उनका सहयोग यदि मुझे प्राप्त न होता तो मैं कुछ भी नहीं कर पाती। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार से उन्होंने मूल्यों की बात की, तो मुझे उनसे अधिक मूल्यों का सम्मान करने वाला व्यक्ति जीवन में अभी तक नहीं मिला। अन्तर सिर्फ इतना है कि आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् आप लोग आसानी से इन मूल्यों को आत्मसात कर सकते हैं परन्तु उनमें तो आत्म–साक्षात्कार से पूर्व ही ये मूल्य विद्यमान हैं। वे अत्यन्त ईमानदार व्यक्ति हैं। उन्होंने करोड़ों–करोड़ों रुपयों के समुद्री जहाज खरीदे परन्तु किसी भी प्रकार की बेईमानी का ख्याल उन्हें नहीं आया। वे अत्यन्त अनुशासित व्यक्ति हैं। मेरे विचार से हमारे अन्दर अनुशासन की कमी है। जो देश अनुशासित हैं वो स्वयं भी उन्नत हुए हैं और उन्होंने अन्य देशों की उन्नत होने में सहायता की है। सहजयोगियों में यदि

सहजयोग का अनुशासन नहीं होगा तो सहजयोग भी किसी अन्य मूर्खता पूर्ण संस्था की तरह से बन जाएगा। श्री श्रीवास्तव का अनुशासन इतना महान है कि मैं समझ नहीं पाती कि वे किस प्रकार इन्हें निभाते हैं ! उदाहरण के रूप में समय के विषय में वे अत्यन्त मर्यादित हैं। इसी प्रकार से अन्य लोगों का सम्मान करने के बारे में, अपना कार्य करने के विषय में, उनसे मिलने आए लोगों के विषय में, हर बात बोलने के विषय में, वे अत्यन्त सावधान रहते हैं कि उचित समय पर क्या कहा जाना चाहिए। सहजता उनके अन्दर इतनी अधिक है, इतनी अन्तर्जात है कि ठीक समय पर वे ठीक बात कहते हैं। सर्वोपरि उनमें इतनी मेधा है कि वे तुरन्त ठीक परिणाम पर पहुँचते हैं। वे आत्मसाक्षात्कारी न थे। परन्तु अब, मुझे लगता है, कि उन्होंने सहस्रार को छू लिया है। परन्तु इससे पूर्व भी वे सही निष्कर्ष पर पहुँचा करते थे। सहजयोग के विषय में आपने उनके दृष्टिकोण को देखा कि उनका दृष्टिकोण कितना ठीक है। आप यदि बुद्धिमान हों केवल तभी आप उचित दृष्टिकोण अपना सकते हैं। जो लोग विवेकशील नहीं हैं वे ऐसा नहीं कर सकते। शुद्ध विवेकशीलता का अर्थ है कि अहं और प्रतिअहं का कोई पूर्वाग्रह न होना। यह गुण आप उनमें शुद्ध अवस्था में देख सकते हैं।

ये स्वीकार करना ही कि मैं ये सारा कार्य करूं, एक पुरूष के लिए बहुत बड़ा बलिदान है। आपमें से कोई भी अपनी पत्नी को तीन महीने तक अपने से दूर रहने की आज्ञा न देगा। ये बहुत बड़ा बलिदान है। परन्तु क्योंकि उन्होंने देखा है कि यही रास्ता है इसलिए उन्होंने न केवल मुझे इसकी आज्ञा दी परन्तु आप जानते हैं कि वे इसके प्रति कितने उदार हैं। हम चीज़ों को देखते हैं और तार्किकता से समझते भी हैं कि ये अच्छी हैं, फिर भी हमारा उनसे सामंजस्य नहीं है। उनमें (सर सी0पी0) मुझे उनका अपना अनुशासन दिखाई पड़ता है। तार्किकता पूर्वक जब वे किसी चीज़ को स्वीकार करते हैं या सोचते हैं कि वो ठीक है तो उस कार्य को कर देते हैं। ये गुण आपनें किसी ऐसे व्यक्ति से सीखना है जिसने स्वयं जीवन पर्यन्त ऐसा किया हो। जिस प्रकार वे सामंजस्य स्थापित करते थे कि उस पर मुझे हैरानी हुआ करती थी! उनके कार्यों में इतना सामंजस्य और सूझ–बूझ है, ये बात मुझे आश्चर्य चकित करती है क्योंकि आत्मसाक्षात्कार के बाद कठोर तपस्या करने पर ही व्यक्ति को ऐसा सामंजस्य प्राप्त हो सकता है। हम कहते कुछ हैं करते कुछ हैं। जैसे बहुत से लोग हर चीज़ की आलोचना करते हैं परन्तु स्वयं यदि वही कार्य करना पड़े तो ठीक वैसा ही करते हैं। वे यदि उच्च पद पर पहुँच गए हैं तो लोग सोचते हैं यह श्रीमाताजी की कृपा से है। चाहे कृपा का इसमें बहुत मामूली अंश हो, फिर भी मैं कहूँगी कि हमारे देश में उन जैसा कोई भी व्यक्ति अवश्य उन्नति करेगा क्योंकि हमारे यहाँ के लोग ईमानदारी, निष्ठा, नैतिकता को अत्यन्त विशिष्ट गुण मानते हैं। इस बार मेरे भारत आने के बाद इतनी संस्थाओं और लोगों ने उन्हें सम्मान प्रदान किया कि मैं

आश्चर्य चकित थी कि उनका इतना सम्मान कैसे हुआ ! आखिरकार वे भी तो किसी अन्य नौकर शाह की तरह से हैं। परन्तु अपने आदर्शो के कारण उनका सम्मान हुआ ! वे आदर्शवादी हैं। पति के रूप में मेरे साथ रहना आसान काम नहीं है, क्योंकि आप जानते हैं, अपने जीवन में मैं किसी भी तरह की चालबाजी की आज्ञा नहीं देती।

भारतीय प्रशासनिक सेवा में जब उनका चयन हुआ तो, आप मानेंगे नहीं, इससे पूर्व उन्हें भारतीय विदेश सेवाओं के लिए चुना गया था। उन्हें कहीं अधिक वेतन मिलता परन्तु मैंने उनसे कहा कि सर्वप्रथम हमें अपने देश की सेवा करनी है, बाहर विदेशों में नहीं जाना। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा स्वीकार कर ली, इसलिए नहीं कि मैंने उन्हें इसके लिए कहा, परन्तु इसलिए कि उन्होंने सोचा कि मातृभूमि की सेवा करनी चाहिए। भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्य करते हुए उन्होंने बहुत कष्ट उठाए फिर भी अपने आदर्शो पर डटे रहे। मेरे विचार से व्यक्ति को उनसे मानसिक अनुशासन सीखना चाहिए। ये मानसिक अनुशासन ये है कि बुद्धि से एक बार स्वीकार करने के पश्चात् ये अनुशासन व्यक्ति की गतिविधियों में झलकना चाहिए। आपको अपने गुणों पर गर्व होना चाहिए। आप उनके पद और सहयोगियों के बारे में जानते हैं फिर भी वे एक बूँद शराब नहीं पीते। कोई भी कह सकता है कि माताजी के कारण ऐसा है। परन्तु मैंने कभी भी उनसे ऐसा नहीं कहा। निःसन्देह मैंने इतना भर कहा कि शराब पीना मुझे पसन्द नहीं है परन्तु कभी ये नहीं कहा कि आप मत पियो। इस प्रकार से मैं कभी भी दखलन्दाजी नहीं करती। सहजयोग के विषय में भी मैंने इस प्रकार से कभी नहीं बताया। ये उनकी अपनी सूझ–बूझ है। लोगों में यदि ऐसा विवेक होगा तो हमें उनके पास जा–जाकर के उन्हें समझाना नहीं पड़ेगा।

जब मैं बच्ची थी तो मेरी माताजी मुझसे कहा करती थीं कि जिस प्रकार से तुम अबोध हो उदार हो, तुमसे केवल श्री शंकर ही विवाह कर सकते हैं। क्योंकि किसी भी गरीब या जरूरतमन्द को देखते ही अपनी माँ के भण्डार से सभी कुछ उठाकर मैं उसे दे दिया करती थी। वे कहा करतीं, " मैं नहीं जानती कि तुम्हारा विवाह किससे होगा, उस बेचारे को श्री शंकर की तरह से निर्धन ही रहना पड़ेगा क्योंकि उसके पास जो भी कुछ होगा वह सब तो तुम बाँट दोगी।" परन्तु मैं तो ऐसी ही हूँ। ये तो मेरा स्वभाव है। कोई यदि ये कहता है कि "मुझे ये चीज़ पसन्द है" तो मैं सब कुछ भूलकर वह चीज़ उसे दे देती हूँ। उन्हें मुझसे एक शिकायत है कि मैंने हमारी मंगनी की अंगूठी भी दे डाली। परन्तु एक ओर से मैं देती और दूसरी ओर से आ जाता। अब वे इस बात को जानते हैं। मेरे इस स्वभाव को बर्दाशत करना किसी भी पति के लिए आसान नहीं है, जिस प्रकार से मैं उदार हूँ। फिर आप सबके लिए मेरा अत्यधिक प्रेममय स्वभाव, इसे भी वे समझते हैं। आपके लिए मेरे मन में गहन प्रेम है। निःसन्देह जब आप लोग आकर मुझे परेशान करते

हैं , लोग आजकल मुझे बहुत तंग कर रहे हैं। कुछ भी घटित होता है उन्हे माँ की याद आती है और भागे आते हैं। कहीं न कहीं किसी न किसी के साथ हमेशा आपात स्थिति बनी रहती है। इस सबको सहन करते हुए भी वे अत्यन्त शान्त रहे। मेरे पति के रूप में, वे मुझे समझ सकते हैं। बचपन से ही वे स्वःनिर्मित व्यक्ति हैं। पूर्णतः ईमानदार। वो कभी झूठ नहीं बोलते, किसी भी प्रकार की चालबाजी नहीं करते, कभी गप्प नहीं मारते। गप्प बाजी से मुझे घृणा है और वो भी कभी गप्प बाज़ी नहीं करते। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में भी उन्होंने अपनी एक तस्वीर बनाई है कि वे एक परिवार की देखभाल कर रहे हैं। **अतः यदि आपने सहजयोगी बनना है तो आप लोगों को भी समझना होगा कि आपने ये सभी मूल्य आत्मसात करने हैं, अन्यथा सहजयोग पूरी तरह नष्ट हो जाएगा।** सहजयोगियों को उन्नत होना होगा। उन्हें ये निर्णय करना होगा कि उन्हें झूठ नहीं बोलना, ईमानदार होना है, परमात्मा पर विश्वास करना है। सर्वशक्तिमान परमात्मा ही उनके पिता हैं और वे अपने बच्चों की देखभाल करते हैं। हमें इस विश्व के मानचित्र को परिवर्तित करना है, विशेष ,रूप से हमारे देश के। इसके लिए हमें चरित्रवान और निर्भीक लोगों की आवश्यकता है जो अत्यन्त ईमानदारी पूर्वक जीवन का सामना कर सकें। हमने कुछ खोया नहीं है। आपने देखा है कि जब हमारे पास कुछ नहीं था तब भी परमात्मा की कृपा से हम प्रसन्न थे। एक बार हमारे यहाँ चोरी हो गई और मेरी सारी साड़ियाँ, इनके सभी कपड़े, सभी कुछ चोर ले गए। कुछ भी न बचा। उस वक्त क्योंकि हमारे पास धन का अभाव था तो मैंने इनसे कहा कि पहले अपने कपड़े सिलवा लो। मैं अपने लिए कपड़े न बनवा सकी। सात सालों तक मेरे पास केवल एक रेशमी साड़ी थी। परन्तु हमने सब कुछ चलाया और उसके पश्चात् सब बढ़िया हो गया। आपके पास कुछ है या नहीं इसका कोई महत्व नहीं है, महत्व तो इस बात का है कि आप किस प्रकार अपना जीवन चलाते हैं।

मेरे बच्चे होना भी आसान नहीं है क्योंकि मैं जानती हूँ आप क्या करते हैं, आपके विषय में मैं सबकुछ जानती हूँ। मैं आपको सुधारती भी हूँ, आप इस बात को जानते हैं। परन्तु जब आप मुझसे जुड़े हुए हैं तो ये बात दर्शाती है कि आप उस श्रेणी के लोगों में से हैं जो विकसित होकर आन्तरिक परिवर्तन द्वारा बेहतर अवस्था को प्राप्त करने के लिए आमादा हैं। सहजयोगी होना सुगम कार्य नहीं है, कि आप कुछ पैसा देकर सदस्य बन जाएं और श्रीमाताजी के शिष्य कहलाएं। मेरे शिष्य बनने के बाद भी आपको कुछ परीक्षाएं पास करनी पड़ती है और इसके लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता है। अपने परिवार में रहते हुए काफी तपस्या करनी पड़ती है। आप ये सब कर रहे हैं इसलिए मैं बहुत प्रसन्न हूँ और जिस तरह से मुझे उन पर (सर सी0पी0 श्रीवास्तव) गर्व है, वैसे ही मुझे आप पर भी गर्व है, वैसे ही मुझे आप पर भी गर्व है। मैं

चाहूँगी कि आप इस बात को देखें कि उन्होंने किस प्रकार अपने जीवन को चलाया। आप लोगों से पूछे कि वे कितने ईमानदार हैं, कितने अच्छे, और सभी के प्रति कितने करुणामय। हमें चाहिए कि सबसे पहले अपनी गलतियों को देखें, दूसरों के दोष नहीं देखने चाहिएं। हम भारतीयों में विशेष प्रकार के दोष होते हैं जिन्हें सुधारने का प्रयत्न हमें करना चाहिए। उस दिन हमारे कार्यक्रम में ऐसे लोग आए जो महाराष्ट्र में आन्दोलन शुरु कर रहे हैं। मैंने उन्हें बताया, " आन्दोलन शुरु करने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि जब आपकी सरकार थी तब आपने क्या किया ?" ज़्यादा से ज़्यादा एक बार फिर आप अपनी सरकार बना लेंगे, परन्तु फिर उसके बाद क्या करेंगे ? उन्होंने उत्तर दिया, " अब हम क्या करें ? चीनी के एक बहुत बड़े व्यापारी से बहुत पैसा ले लिया है, सारा वैभव इक्ट्ठा कर लिया है और कीमतें बढ़ा दी हैं। जमाखोरी की चीनी को वो अब बहुत महगें दामो पर बेच रहा है क्योंकि उसने चुनावों के लिए पार्टी को बहुत पैसा दिया था।" मैंने कहा, " अब आप लोग सहजयोग के दृष्टिकोण से निर्णय करें कि आप किसी ऐसे आदमी को वोट नहीं देंगे जो आपको वोट के लिए पैसा देता हो, आप अपने वोट बेचेंगे नहीं। खाने तक के लिए हम अपने वोट बेच देते हैं– हमारे अन्दर आत्मानुशासन का पूर्ण अभाव है।" कम से कम सहजयोगियों को तो ये कार्य शुरु कर देना चाहिए। आइए हम सब मिलकर निर्णय करें कि हम किसी भी प्रकार के गलत तरीके नहीं अपनाएगें, किसी भी कीमत पर नहीं, और न ही हम किसी ऐसे आदमी को चुनाव जितवाएंगे जो ईमानदार और सत्यनिष्ठ नहीं है। हमें इसका मुकाबला करना होगा, केवल तभी हमारा देश सुधर सकेगा। आरम्भ में हमें कुछ बलिदान करना होगा। जैसा आपने देखा, मुझे भी बलिदान करना पड़ा। परन्तु बलिदान करना कठिन कार्य नहीं है। अन्य महिलाओं के पास मैं बहुत से गहनें आदि देखा करती थी परन्तु इन चीज़ों के लिए कभी मेरे मनमें इच्छा नहीं हुई। उसकी अपेक्षा मुझे इस बात पर गर्व है कि मेरे पति चरित्रवान व्यक्ति हैं।

महिला के लिए यही सबसे बड़ा आभूषण और गर्व है। सभी सहजयोगियों और सहजयोगिनियों को ऐसे ही सोचना चाहिए। अपनी इच्छा शक्ति को हमें उपयोग करना होगा। सभी में कुछ न कुछ कमियाँ हैं। इन कमियों को उचित ठहराने के स्थान पर इन्हें ठीक करने के लिए सभी को चाहिए कि अपनी इच्छा शक्ति का उपयोग करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन ऐसा आएगा जब श्री–श्री वास्तव इस देश को इस प्रकार से परिवर्तित होता हुआ देखेंगे जैसे वे स्वयं परिवर्तित होते रहे हैं। ये भी हो सकता है कि एक दिन वे हमारे कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करेंगे। हमे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो दिव्यता के जिज्ञासु हों और जो वर्तमान स्थिति को परिवर्तित करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हों।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(निर्मल योगा से उद्धृत एवं अनुवादित)

सहजयोग का अलिखित इतिहास

(अंक 9–10 से आगे)

श्रीमाताजी को उनके साथ अत्यन्त धैर्य रखना पड़ा।

मुझे याद है कि आरम्भिक सहजयोगियों के साथ श्रीमाताजी कभी–कभी बहुत सख्त होती थीं। वे अविश्वसनीय ढंग से विनोदशील एवं स्नेहमय हो सकती थीं। परन्तु आवश्यकता पड़ने पर वे अत्यन्त सख्त भी होती थीं। उन दिनों मे वे पूरी तरह से माँ के रूप में होती थीं। प्रारम्भिक सहजयोगयों में यह मूल विवेक विकसित नहीं हुआ था। जैसे एक साधक कब्रिस्तान के चैतन्य को जाँचने के लिए चला गया। जब वह वापिस आया तो श्रीमाताजी को उस पर घण्टों काम करना पड़ा। "तुमने ऐसा क्यों किया ?" वह इसका कोई कारण न बता पाया। एक सहजयोगिनी कहीं से एक हार खरीद लाई और माँ कह रहीं थीं, "तुम्हें चीज़ों का चैतन्य देखना चाहिए।" उन्होंने कहा, " इस हार का चैतन्य कुछ ठीक नहीं है।" श्रीमाताजी ने एक बाल्टी पानी मंगवाया और उस हार को पानी में डुबो दिया, पानी काला हो गया, इसमें से एक काला बादल उभर आया और जैसी उनकी शैली है उनके मुँह से निकला, आह। "इसे देखो।" सबने देखा परन्तु कोई भी जल्दी से सीखा नहीं। श्रीमाताजी को, उन लोगों के साथ बहुत धैर्य रखना पड़ा

Kevin Anslow

एकदम से भिन्न ब्रहमाण्ड

(Ice House wood) आइस हाऊस वुड Hurst green में स्थित अपने घर पर श्रीमाताजी ने सप्ताहान्त का आयोजन किया।Hurst Green जो ऑक्सटैड के समीप Sussex में है। हम सब वहाँ रेल से गए। ये सब अद्भुत था क्योंकि अजीब किस्म के लोग एक ऐसे वातावरण में एकत्रित हुए थे जहाँ, श्रीमाताजी के कथानुसार एक चूहे को भी घुसने की इजाजत नहीं थी। उस क्षेत्र में तो लोग अन्जान लोगों को प्रवेश भी न करने देते थे, जीन और पुराने फैशन के कपड़े पहने हुए पन्द्रह हिप्पी जैसे लोगों का तो प्रश्न ही न था। घर में नीचे एक बहुत विशाल बैठक थी जिसमें भारतीय कालीन बिछे हुए थे। उसके ऊपर मियानी (Mejjanine Room) थी जिसमें खूब सारी धूप आ सकती थी और जहाँ श्री गणेश की एक अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा रखी हुई थी और अन्य देवी–देवताओं की प्रतिमाएं भी थीं।

(Maureen Rossi)

पैट (Anslow) मुझे सीढ़ियों के रास्ते पहली मंजिल पर ले गया और श्री गणेश की विशाल प्रतिमा दिखाई। वह कहने लगा "देखो इस प्रतिमा में इतना अच्छा चैतन्य है।"मैने कहा, " यहीं लटके रहो।" एक प्रकार से मैंने प्रतिक्रिया नहीं की।

मुस्लिम पृष्ठभूमि से होने के कारण मैंने सोचा, "ये क्या बात कर रहा है ? किस चीज़ के विषय में बात कर रहा है ?" पीछे हटते हुए मैंने चैतन्य महसूस करने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें चैतन्य न था। ये लकड़ी की प्रतिमा है जो चैल्शम रोड आश्रम लंदन में है।

श्रीमाताजी के घर में जिस चीज़ ने मुझे प्रभावित किया वह थी कि घर के अन्दर रखी हुई सभी प्रतिमाओं से तेजी से चैतन्य प्रवाहित हो रहा है। जहाँ भी आप जाएं आपको एक प्रकार का मौन और शान्ति महसूस होती थी परन्तु अत्यन्त शक्ति शाली वातावरण जिसका वर्णन कर पाना कठिन है। आप केवल इतना कह सकते हैं कि वहाँ पर कोई अत्यन्त शक्तिशाली चीज़ आपके अन्दर और बाहर गहन प्रभाव छोड़ रही थी। फिर भी आप इसके मध्य में थे और आपको लगता था कि आप एक अत्यन्त भिन्न प्रकार के ब्रह्माण्ड में है

Djamel Metouri

श्री माताजी ने हम पर कार्य किया और हमसे बातचीत की। लगभग तीन घण्टे तक वहाँ पर भारतीय खानों की शानदार सुगन्ध थी। हम सब भूख से मर रहे थे, उन्होंने बहुत जल्दी खाना बनाना शुरु किया था। मुझे लगा कि मैं बीमार होने लगा हूँ। फिर भी मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। ये आश्चर्य जनक शुद्धिकरण था। इसके बाद सभी लोग नीचे बैठक में गए और फ़र्श पर सो गए। फ़र्श पर सर्वत्र पड़े हुए शरीरों की तस्वीरे हमारे पास हैं। पुनः एक सत्र में श्रीमाताजी ने हम पर कार्य किया परन्तु मुझे अन्दर बाहर जाते रहना पड़ा। परन्तु मुझे ऐसे लग रहा था मानो मैं शरीर के अहसास से मुक्त हो गया हूँ। मेरे लिए यह अत्यन्त अजीब अनुभव था। घर में बालकॉनी गोलाई में बनी हुई थी और सभी कमरों तक पहुँचती थी।

मैं क्योंकि बीमार थी इसलिए श्रीमाताजी ने कहा, "मोरीन तुम आकर मेरे कमरे में सो सकती हो। जब सोने का समय आया तो मैंने स्वयं को सबके पीछे छिपाने का प्रयत्न किया क्योंकि मुझे विश्वास हो गया था कि जब श्रीमाताजी कमरे से बाहर गईं तो वो लुप्त हो गईं थी। वे गोल घूमती हुई सीढ़ियों से घर के मध्य में गईं और आधी सीढ़ियाँ चढ़ने पर मुझे देख लिया और भीड़ के अन्दर से मुझे निकाल लाईं। मैं डर गई थी कि क्या होने वाला है। जो भी हो उनका बिस्तर अत्यन्त आरामदेह था। हिप्पी पृष्ठभूमि से होने के कारण रात को पहनने के कपड़े जो मैं लाई थी वो कुछ विशेष अच्छे न थे। उन्होंने मुझे पेटीकोट और स्वेटर पहनाए। नींद में भी पूरी रात उन्होंने मेरी पीठ पर कार्य किया। उठने तक भी मैं बीमार बनी रही। वो कभी खर्राटे लेने लगतीं, एकदम से खर्राटे बन्द होते और वो कहतीं "अब बेहतर है।" फिर वे अपना हाथ मेरी पीठ पर तथा भिन्न स्थानों पर रखतीं और कुछ देर तक खर्राटे लेतीं फिर रुक जातीं और कहतीं "अब कैसा लग रहा है।" और ये सब सारी रात चलता रहा। प्रातः काल मुझे केले और इलायची के बीज खाने की आज्ञा दी गई। तो

ये पूर्णतः सूक्ष्म ध्यान वे हमारी ओर दिया करतीं थी।

हमारे लिए उनका ये सब करना अत्यन्त अविश्वसनीय है। बाद में छः महीनों के लिए वे भारत चली गईं। हम थोड़े से लोग परस्पर मिला करते और ध्यान करने का प्रयास करते परन्तु ध्यान के मामले में हमारी स्थिति बहुत अच्छी न थी। जाने से पूर्व श्रीमाताजी ने कहा था " जब मैं भारत जाऊंगी तो तुम मेरे साथ भारत आकर वहाँ के सभी सहजयोगियों से मिल सकती हो।" अतः हमने पैसे बचाने शुरु किए। जब वो वापिस आईं तो हमारी स्थिति ऐसी थी कि उन्होंने कहा, " इसे भूल जाओ आपकी स्थिति ऐसी नहीं है।" परन्तु पुनः वे हमसे हर सप्ताह मिलने लगीं, प्रायः शनिवार और इतवार को, तथा अपने घर पर हमें बुलाने लगीं।

(Maureen Rossi)

मैं किस प्रकार आपके यहाँ आऊंगी ?

हम उनके घर ऑक्सटड में गए। मुझे छोटी–छोटी चीज़ें भी याद हैं क्योंकि उस समय मैं बहुत छोटा था। नक्शे बनाना मुझे अच्छा लगता था– वास्तव में अब भी अच्छा लगता है– आजकल मैं उन्हें एक प्रकार की कहानियों के लिए बनाता हूँ जो मैं लिखता हूँ। परन्तु उन दिनों मैं नक्शे तो बनाता था परन्तु इस बात का मुझे ज्ञान न था कि क्यों बनाता हूँ। मैंने एक नक्शा बनाया जिसमें कुछ टापू (Island) थे। इसमें एक टापू मेरे लिए था और एक श्रीमाताजी के लिए। श्रीमाताजी कहने लगीं, "ये बात अच्छी नहीं है, कैसे मैं आपके पास आऊंगी ?" मैंने कहा, " मैं रेलगाड़ी तो ला नहीं सकता। अगर भूमिगत रेलगाडी लाएं तो कैसा रहे ?" माँ ने कहा, " ठीक है, ये बहुत अच्छा रहेगा।" और उनके आदेश के अनुसार हमने उस नक्शे में भूमिगत रेल के लिए पटरी बनाई। इससे सभी समस्याएं हल हो गई।

(Kevin Anslow)

उन्होंने हमें अत्यन्त स्नेह दिया।

हम आरम्भिक दिनों की बात कर रहे हैं। आरम्भिक दिन मेरे लिए वर्ष 1977 का बसन्त और ग्रीष्म ऋतु हैं। आरम्भिक दिनों की जो विशेष बात थी वो यह थी कि श्रीमाताजी के पास बहुत कम सहजयोगी थे, बहुत अधिक लोग न थे। वे उनका स्तर ऊँचा करने में लगी हुई थीं ताकि वे इतने शक्तिशाली हो सकें कि सामूहिकता को बढ़ाया ज़ा सके।

मैं, जब आया था तो शायद छः या सात लोग थे–सम्भवतः मैं आठवाँ व्यक्ति था। उन दिनों के कुछ सहजयोगी जा चुके हैं। मुझे याद है कि किस प्रकार वे Gus नामक एक आस्ट्रेलियन लड़के पर कई सप्ताह तक कार्य करती थीं ! वे उसे अपने घर ले गईं, उसकी देखबाल की, उसे ठीक किया। वह लड़का नशीली दवाओं में सर्वज्ञान सम्पन्न Encyclopedia था। वास्तव में वह बहुत बुरा था। वास्तव में उसे बहुत समस्याए थी और श्रीमाताजी पूरा–पूरा दिन उस पर कार्य करती थीं। उन्होंने

कोई कसर बाकी न छोड़ी। सबसे विशेष बात जो थी कि उन्होंने उस लड़के को पूरा प्रेम दिया, फिर भी तीन महीने बाद वह वहाँ से चला गया। उसने सहजयोग छोड़ दिया। वह वहाँ पर रह सकता था। श्रीमाताजी ने कभी उसे इन्कार नहीं किया था। उन्होंने कहा, "ठीक है।" हमारे दृष्टिकोण से यदि आप इस बात को देखें तो उसने श्रीमाताजी के प्रयत्नों को बर्बाद कर दिया था। परन्तु श्रीमाताजी ने कभी भी इस नज़रिए से बात नहीं की। उनके अनुसार, उन्होंने तो अपना प्रेम दिया था और उस प्रेम पर कोई बन्धन न था।

श्रीमाताजी की एक सबसे बड़ी विशेषता है माँ के रूप में मूलतः उनके पास आने वाले सभी सहजयोगियों का पोषण करना। अपने पूर्ण प्रेम से उनका पोषण करना ताकि वो सहजयोग में बने रहें और महसूस करें कि श्रीमाताजी हमें वो दे रही हैं जो हमें नहीं मिल पाया। जैसे शिरडी साईं नाथ ने कहा था, " शायद हम जो चाहते थे वो हमें वही देना चाहती थीं।" वे हमें अपने घर लेजाकर अथक कार्य करती थीं। हमारे लिए खाना बनाने में भी उन्हें किसी प्रकार का एतराज़ न होता। कल्पना करें, आदिशक्ति अपने घर में हम थोड़े से लोगों के लिए स्वयं खाना बना रही हैं ! सात, आठ, नौ या अधिक से अधिक दस सहजयोगी होंगे और वे स्वयं हमारे लिए खाना बनाती ताकि हमारी नाभियों को चैतन्य दे सकें। हमारी बिगड़ी हुई नाभियों को वे सुधारना चाहती थीं। अपने घर पर चाहे वह हर्स्ट ग्रीन (Hurst Green) का घर Ashley Gardens का फलैट हो– जिस प्रकार वे हमारा स्वागत करतीं और हमारी देखभाल करती, वह स्मरणीय है। उन्होंने हमें इतना अधिक स्नेह दिया।

(Djamel Metouri)

सच्ची माँ की तरह–

श्रीमाताजी हमारे लिए खाना बनातीं। निम्बू, चैतन्यित करतीं और हम पर लगातार अथक कार्य करतीं। हर सप्ताह वे आश्रम आतीं, हमारे चक्रों पर कार्य करतीं, हमारा चैतन्य जाँचतीं और देखतीं कि हम किस प्रकार प्रगति कर रहे हैं। वास्तव में एक सच्ची माँ की तरह वे हमारी देखभाल कर रही थी

(Miodrag Radosavlievic)

वे जैकटें और टाइयाँ खरीदतीं–

श्रीमाताजी एक दुकान पर जातीं। मुझे इसलिए पता है कि वो मुझे और कुछ अन्य लोगों को अपने साथ ले जाया करती थीं। वे उन्हें सर सी0पी0 की पुरानी टाईयाँ देतीं और सर सी0 पी0, उनके पति अन्तर्राष्ट्रीय जहाज रानी संस्थान क अध्यक्ष थे। अन्तर्राष्ट्रीय समाज में उनका बहुत ऊँचा स्थान था और हमें तो मानो किसी गटर से खोद कर निकाला गया हो। मुझे याद है कि मुझे भी एक टाई मिली थी। हमेशा वे पूजा के समय टाइयाँ बाँटती थीं। वे टाइयाँ, जैकटें और कपड़े दिया करतीं। वे मुझे बाहर ले गईं और मेरे लिए जैकटें खरीदीं, मेरी बहन के लिए वस्त्र खरीदे। इन वस्त्रों पर उन्होंने सौ पाऊण्ड से भी अधिक धन खर्चा होगा। ये

खरीदारी उन्होंने Bricklane (लन्दन का पूर्वी छोर) पर की।

(Ray Harris)

बेहद सस्ता

श्रीमाताजी ने मेरे लिए एक परिधान खरीदा। मुझे याद नहीं आता मेरे बचपन के बाद किसी ने मेरे लिए कुछ खरीदा हो– मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि किस प्रकार इसे स्वीकार करूं, मैं ये भी न जानता था कि इसके लिए मुझे कीमत देनी होगी या नहीं। उस क्षण की मर्यादा का वास्तव में मुझे ज्ञान न था। मैंने कहा, " मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। " मैं इसकी कीमत देना चाहता था जिसकी आज्ञा उन्होंने दी। फिर वे एक और परिधान लाईं। इस प्रकार मुझे दो जोड़े मिल गए।

(Vicky Halperin)

हाँ, वो कभी भी पैसा नहीं लेंगी। यही अन्तर है। आप गुरुओं के विषय में सुनते होंगे परन्तु सभी पैसे लेते होंगे। आप अपना सभी कुछ उन्हें दे देते हैं। अपनी बहन के लिए (Sharon Vincent) खरीदे गए कपड़ों की कीमत जब मैंने श्रीमाताजी को देने का प्रयत्न किया तो उन्होंने वो पैसे फैंक दिए और कहा, " मूर्ख मत बनो। तुम कर क्या रहे हो ? मुझे तुम्हारे पैसे नहीं चाहिए, मूर्ख मत बनो।"

(Ray Harris)

जब मैं उनके लिए एक तोहफा लेकर आया तो उन्होंने मुझसे कहा, "क्या मैं उनका संरक्षक बन रहा हूँ ? उन्हें कोई तोहफे नहीं चाहिएं।" कहने लगीं, " आप मुझसे गुरुओं की तरह से व्यवहार नहीं कर सकते।" व्यक्तिगत उपहार लाना उचित न था। बाद में हमें बता दिया गया कि सामूहिक उपहार तो ठीक हैं परन्तु व्यक्तिगत उपहार देना ठीक नहीं है। माँ जब मेरे घर से गईं तो मेरी आँखों में मोटे–मोटे आँसूं आ गए। ये सोचकर कि मैंने माँ को नाराज़ किया है।

हमने भी वही महसूस किया जो श्रीमाताजी ने किया।

घर के कुछ भागों में हम रंग रोगन कर रहे थे। शायद ये सन् 1974 था। इसका एक विशेष अनुभव मुझे याद हैं। श्रीमाताजी श्री श्रीवास्तव के साथ किसी सभा या स्वागत समारोह में गईं। उस समय वे अन्तर्राष्ट्रीय जहाजरानी संस्थान के मुख्य निदेशक थे। वे हमें घर छोड़ गईं। हम एक दीवार को साफ करके उस पर रंग कर रहे थे। आधी रात के करीब हमें तेज सिरदर्द हुआ और बड़ा अजीब सा अहसास हुआ, परन्तु हम कार्य करते रहे। वक्त गुज़र गया। जब श्रीमाताजी वापिस आईं और हमसे पूछा, कि हम कैसे हैं तो मैंने कहा, " आधा कार्य करने के बाद मुझे भयंकर सिरदर्द हुआ। मेरी समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है।"उन्होंने कहा, "ओह ! हुआ ये था कि हम एक स्वागत समारोह में गए थे और वहाँ किसी ने गलती

से एक गिलास शराब (wine) दे दी, और मैंने उसे पी लिया।"

तो श्रीमाताजी ने जो शराब पी थी उसका असर हम पर भी आया। इसका प्रभाव क्योंकि अचेतन पर हुआ इसलिए हमारे पर भी इसका असर हुआ। स्पष्ट है कि उस समय हम गहन ध्यान में थे इसलिए हमें भी सामूहिक अचेतन (Collective unconcious) के माध्यम से वही अहसास हुआ जो श्रीमाताजी को हुआ था। यह आश्चर्य चकित कर देने वाला अनुभव था।

(Douglas Fry)

उन्होंने भिन्न विधियाँ अपनाईं।

ऑक्सटैड के घर में मेरे लिए एक अत्यन्त स्मरणीय घटना घटी। वहाँ हम बहुत देर रहा करते थे और श्रीमाताजी हमारे लिए खाना बनाया करतीं थी। खाना बनाने के लिए वहाँ पर नौकर भी थे परन्तु कभी–कभी वे स्वयं हमारे लिए खाना बनातीं और हम पर कार्य करतीं। ये सब अत्यन्त गहन था। अपने दोनों हाथ श्रीमाताजी के चरण–कमलों के नीचे रखकर हम झुक जाते तथा अन्य सहजयोगी आस–पास इक्ट्ठे हो जाते और ये कार्य कभी–कभी तो घण्टों तक चलता रहता ताकि उस व्यक्ति के चक्र शुद्ध हो सकें। पूरा समय वह व्यक्ति अपना सिर श्रीमाताजी के चरणों पर रखकर प्रणाम मुद्रा में बना रहता। अत्यन्त सुन्दर तरीकों से हमारी देखभाल करते हुए वे सभी विधियाँ अपनातीं।

मुझे याद है एक बार उन्होंने मेरे सिर की तेल–मालिश की। घर के आस–पास हम छोटे–छोटे कार्य करते थे। मुझे याद है कि एक बार हम किसी चीज़ पर रंग करने के लिए उसे रेगमार (Sand Paper) से रगड़ रहे थे और श्रीमाताजी वहाँ आईं और हमारे साथ कार्य करने लगीं। उन्होंने भी एक रेगमार का टुकड़ा लिया और उससे चीज़ों को रगड़ा। भोजन तो अत्यन्त स्मरणीय हुआ करते थे, क्या ऐसा नहीं होता था ? हमें वास्तव में बिगाड़ दिया गया था, अत्यन्त बिगाड़ दिया गया था।

मुझे याद है कि एक दिन मैं उनके घर पर आया तो वे कहने लगीं, " तुम बाहर चले जाओ। मैं तुम्हें साफ करती हूँ और तुम हो कि पकड़ जाते हो।" उन्होंने मुझे अपने सामने लिटा लिया, अपना जूता निकाला और वास्तव में मेरी रीढ़ पर जूते बजाए–बहुत जोर से– इतने जोर से कि मुझे सितारे नज़र आ गए। परन्तु उससे कार्य हुआ। उसके बाद मुझे लगा कि मैं बाधा मुक्त हो गया हूँ

(Pat Anslow)

एक शक्ति है और एक पावनता

मैं अभी तक पूरी तरह से मध्य में न था। तब तक मेरे अन्दर आज्ञा की समस्या बनी हुई थी। श्रीमाताजी मुझे भिन्न रंगो में से निकलती हुई दिखाई देती थीं। कभी वे हरे इन्द्रधनुषी रंग में होतीं और कभी सुन्दर लाल इन्द्रधनुषी रंग में। मुझे

उनके अन्दर से ये प्रकाश जैसी चमक दिखाई पड़ती। परन्तु वास्तव में ऐसा आज्ञा चक्र की समस्या के कारण था मैंने ये बात श्रीमाताजी से बताई। उन्होंने कहा," ये सब तुम्हें दिखाई नहीं देना चाहिए।" उन्होंने कहा," एक शक्ति है और एक पावनता। मुझे वास्तव में वो रंग दिखाई देते थे, परन्तु उन्होंने बताया कि ," यदि आप ये रंग देख सकते हैं तो इसका अर्थ ये है कि आप वास्तव में मध्य में नहीं हैं। आप एक ओर झुके हुए हैं।"

(Douglas Fry)

नन्हें शिशु की तरह से मैं श्रीमाताजी को देख रहा था।

मैं माँ को ऐसे देख रहा था जैसे एक नन्हां शिशु देख रहा हो। कहने से अभिप्राय ये है कि जितनी बार भी मैं उन्हें देखता दौड़कर उनके गले लग जाता। ये कार्य ऐसा है जो आप बड़े होकर नहीं कर सकते। बड़ा होने के बाद मर्यादाएं बदल जाती हैं। मुझे याद है कि मैं भी बड़ा हुआ। इस मर्यादा का मुझे ज्ञान न था। मैं न जानता था कि मैं क्या करूं क्योंकि बुद्धिवादी सहजयोगी इसमें बुद्धि लगाने लगते थे। परन्तु मुझे याद है कि मैं दौड़ कर श्रीमाताजी को गले लगा सकता हूँ। मेरे लिए वे एक बड़ी आयु की मित्र थीं। उन दिनों बात बिल्कुल भिन्न होती थी। लोग आसानी से उन तक पहुँच सकते थे। चीज़ें आज की तरह से इतनी गहन न थी कि कभी–कभी व्यक्ति माँ से मिल सके।

मुझे याद है कि मेरी ऑण्टी मोरीन (Maureen Rossy) कहा करती थी कि श्रीमाताजी पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के सम्पर्क में ज़्यादा आती थीं और उनके साथ घुल–मिल जाती थीं। परन्तु उनके प्रवचनों आदि से आप देखेंगे कि भिन्न क्षणों में उनका कोई विशेष पक्ष अभिव्यक्त होता है, कभी तो वे अत्यन्त गम्भीर और शिक्षक सम होती हैं और कभी अत्यन्त विनोदशील। उनमें ये गुण है। परन्तु उन दिनों में वे अधिक गम्भीर नहीं होती थीं। मेरे विचार से शायद उन दिनों लोग उनकी पूर्णाभिव्यक्ति के योग्य न थे।

(Kavin Anslow)

मैं स्रोत की तरह से हूँ

श्रीमाताजी से ये मुलाकात मुझे याद है। हम सात या आठ लोगों को उन्होंने अपनी बैठक में इस प्रकार से ध्यान करवाया। मोरीन, गस और पुराने समय के लोगों में से Pat और Douglas वहाँ पर उपस्थित थे। एक स्थिति ऐसी आई जब माँ हमें सिखा रही थीं कि वे क्या हैं ? वे हमें अपनी असलियत समझाने का प्रयत्न कर रही थीं। तब उन्होंने कहा, " परमात्मा की शक्ति तो केवल मेरे पीछे चलती है। मैं स्रोत की तरह से हूँ और ये शक्ति मेरे पीछे बह रही है।" तब हमें ये बात समझ आई कि माँ हमें बता रही थीं कि वे कौन हैं। वे हमारे मूलाधार चक्र पर कार्य करने का प्रयत्न कर रही थीं।

Gus कह रहा था कि उसने श्रीमाताजी को श्रीगणेश के रूप में देखा। वह आश्चर्य–चकित हो गया। इससे पूर्व उसने कभी श्रीमाताजी को इस रूप में न देखा था।

(Djamel Metouri)

आदिशक्ति के जूते

मुझे ऐसा लगता है कि आरम्भिक दिनों से ही मैंने समझ लिया था कि श्रीमाताजी क्या कर रही थीं। मुझे समझ आ गई थी कि वे पूर्ण, महान क्रान्ति और मानवता में विश्व स्तरीय परिवर्तन ला रही हैं। इस क्रान्ति के सम्मुख फ्रांस और रूस की क्रान्तियाँ तुच्छ थीं।

दूसरी ओर मैं अपने चहुँ और देख रहा था कि किस प्रकार हमारा वहाँ पहुँचना सम्भव होगा । मेरे मस्तिष्क में ये समस्या और तनाव था। ये ऐसा था जैसे विशाल पर्वत की तलहटी में व्यक्ति खड़ा हो और उसे इस बात का ज्ञान न हो कि चोटी पर चढ़ना कैसे है !

मुझे याद है अगस्त 1975 के एक दिन श्रीमाताजी के Hurst Green स्थित घर के मेज़ पर लगभग सात सहजयोगी बैठे हुए थे। ये कहना अनावश्यक होगा कि उन दिनों हम सब नए थे, कोई और न था। श्रीमाताजी अपने चप्पल मेज़ पर रखने लगीं– निःसन्देह ये जूते अत्यन्त अच्छे और सुन्दर थे। परन्तु हमें एक बात का ज्ञान न था कि श्रीमाताजी ऐसा इसलिए कर रही हैं क्योंकि उनके जूतों से बहने वाली चैतन्य–लहरियाँ बहुत तेज़ थीं। तो मैं मेज के इर्द–गिर्द बैठे मुट्ठी–भर आश्चर्य चकित लोगों की ओर देख रहा था जो मेज़ पर रखे श्रीमाताजी के जूतों के जोड़ो को देखते हुए सोच रहे थे, " क्या हम इन्हीं (जूतों) से विश्व को परिवर्तित करने वाले हैं ?" मेरी गलती अपने चित्त को जूतों के स्थान पर दूसरे लोगों पर डालना थी। मुझे इस बात का ज्ञान न था कि जूते यदि आदिशक्ति के हों तो वे क्या कर सकते हैं। यदि हम विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं तो निश्चित रूप से हमें श्रीमाताजी के इन जूतों को ऐसे सम्भालना चाहिए जैसे भरत ने अपने बड़े भाई श्रीराम के खड़ाऊं सम्भाले थे।

Gregoire de kalbermatten

(क्रमशः)

निर्मल धाम NIRMAL